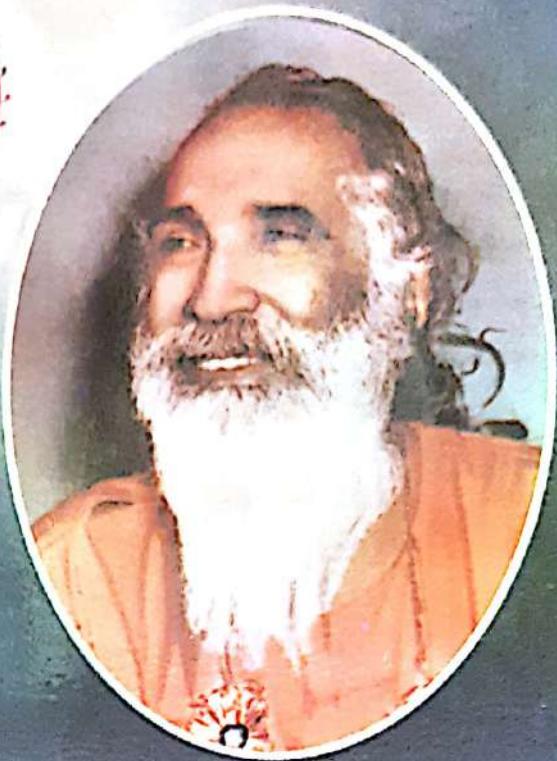


सत् नाम साक्षी

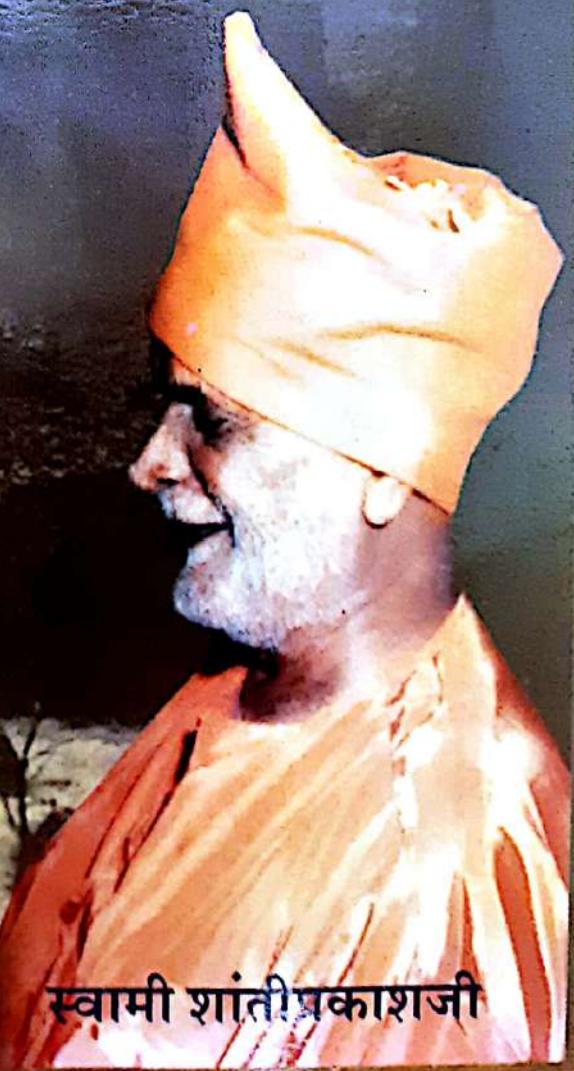


स्वामी टेझ़ेंद्रायजी



स्वामी सर्वनन्दजी

गुणगान

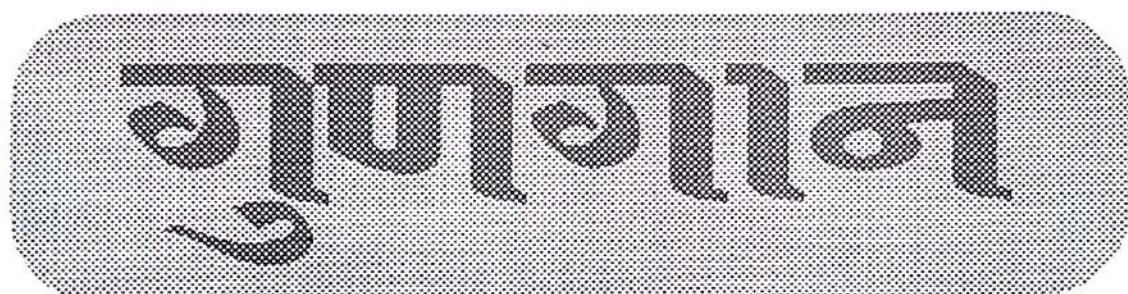


स्वामी शांतीप्रकाशजी



सत् नाम साक्षी

सदगुरु स्वामी शांति प्रकाश जी महाराज
की याद में संकलित भजन



प्रकाशकः

प्रेम प्रकाश आश्रम

सूरत.

सत्‌नाम साक्षी

सत्‌नाम के दरबार नींव मिल जाए

सत्‌नाम साक्षी

सेवा में:

अशोक प्रकाश, बड़ौदा.

तिथि : १९-४-२००३

स्वामी टेऊंराम मेला

प्रथम संस्करण : २०००

भेटा : रु.५.००

ਸਤਾਨਾਮ ਸਾਕਥੀ

ਸ਼ਲੋਕः ਸੇਵਾ ਕਰਮਣਿ ਸੰਲਗਨੁ, ਪਰੇ ਬ੍ਰਹਮਣਿ ਸੰਸਥਿਤਮ्।
ਸ਼੍ਰੀ ਸ਼ਵਾਮੀ ਸ਼ਾਨਤਿ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਾਂ, ਸਦਗੁਰੁਂ ਨਿਤਿਂ ਨਮਾਮਿ॥

ਵੰਦਨ ਕਰਤੇ ਹੈਂ- ੨

ਹਮ ਸਾਬ ਵਨਦਨ ਕਰਤੇ ਹੈਂ- ੨

ਜੋ ਸੇਵਾ ਕਾ ਧਰਮ ਸਿਖਾਤੇ,
ਕਰਮ ਧਰਮ ਕਾ ਮਰਮ ਲਖਾਤੇ,
ਪਤਿਤਾਂ ਕੋ ਭੀ ਪਾਰ ਲਗਾਤੇ,
ਉਨ ਕਰਮਯੋਗੀ ਗੁਰੂਦੇਵ,

ਸ਼ਵਾਮੀ ਸ਼ਾਨਤਿ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਕੋ ਹਮ ਸਾਬ ਵਨਦਨ ਕਰਤੇ ਹੈਂ।

ਹਮ ਸਾਬ ਵਨਦਨ ਕਰਤੇ ਹੈਂ- ੨

ਵਨਦਨ ਕਰਤੇ ਹੈਂ- ੨



~~~~~ ३ ~~~ दोहे ~~~

१-जग हितकारी जगत में-देखा संत विशाल।

सत्गुरु शांति प्रकाश जी-दाता दीन दयाल॥

२-धर्मरूप बने धरनि पै-करने धर्म प्रचार।

सत्गुरु शांति प्रकाश को-वंदन बारम्बार॥

३-पतितों की पीड़ा हरें-दुखियों के दुख दूर।

सत्गुरु शांति प्रकाशजी-करत कष्ट काफूर॥

४-सत्गुरु शांति प्रकाशजी-करते पर उपकार।

दीन हीन निर्बल दुखी-पातक अधम उद्धार॥

५-भक्तों की भयता हरें-भरम करें चकचूर।

सत्गुरु शांति प्रकाश जी-दें आनन्द भरपूर॥

६-परम प्रेम के पुंज हैं-परम मनोहर रूप।

सत्गुरु शांति प्रकाश जी-माधुरी मधुर स्वरूप॥

७-सत्गुरु शांति प्रकाश की-बड़ी अनोखी बात।

सरल सरस सुखरूप हैं-मधुर मधुर मुस्कात॥

८-सत्गुरु शांति प्रकाशजी-आप सर्व आधार।

भवजल भारी लहर से-मोहि करो प्रभु पार॥

## ~~~~~ हौं श्री हौं ~~~ सत्त्वनाम साक्षी

~~~ श्री भजन-१ श्री ~~~

तर्जः-सिक में आहिनि फायदा.....

थलुः-उमिर वदी शल ईश्वर द्वींदो-स्वामी शांति प्रकाश खे।

कैम्प कल्याणी वेही वसाई-शंकर ज्यां कैलाश खे।

१- मेला मल्हाए रासियूं रचाये-सब जी पुजाए आश खे।

दुखियनि बुखियनि जी खटंदो रहे शल-सदा सदा शाबाश खे ॥

२-सती जती थी रहे सदाई-पाये पद अविनाश खे।

मान मरतबो माणे मिठडो-खुदी विजाए ख्वाहिश खे ॥

३- अंदर जी टेऊँराम स्वामी-दीद द्वींदो शल दास खे।

गुरु भक्तिअ में भिनो रहे शल-नींहुं रखी नरमाइश खे ॥

४-काया कंचन कंदुसु गुरू-ऐं सालिम रखंदुसि स्वास खे।

ईश्वर शाल ओनाईंदो-पहिलाज जी हिन अरदास खे ॥

~~~ श्री भजन-२ श्री ~~~

थलुः-स्वामी शांति प्रकाश सुखन जो भण्डार।

करे महिर सभते अहिडो आहे दातार ॥

१-गरीब अनाथ सब खे वसाए।

दाता थी हलाए, पाए को न पार ॥

२-सारो जगु सारहाए-जिते पेर पाए।

सुजा घर वसाए-चवे बुढिडो बार ॥

३-भला भागु तिन जा-जे घर में घुराइनि।

पाप जनमनि लाहे द्विसे थों संसार ॥

४-जीवन मुक्त जाई-वेही खबर बुधाई।

कई सत्गुरु कृपा-करे को वीचार ॥

~~~~~ ॐ ६ शं ~~~

~~~ ६ भजन-३ ६ ~~~

तर्जः:-ये मौसम रंगीन समा...

थलुः:-गुणी गुणवान ज्ञानी आ-माण हूंदे निर्मानी आ।

स्वामी शांति प्रकाश सचारो-लाल सचो लासानी आ॥

१-आहे दिल जो संत उदारी-जंहिंखे चाहिनि था नर नारी-वाह जो प्रेम आ।

फहले भोजन जो भण्डारो-खाए पंहिंजो चाहे धारियो-अहिंडो नेम आ।

संतनि सां सहचारी आ-पूरन पर उपकारी आ, स्वामी शांति प्रकाश..

२-आहे आश्रम आनंद वारो-को द्विसंदो भाग्नि वारो-जंहिंजो भाग्न आ।

थिये गऊशाला जो दर्शन-करे दर्शन दिल थिये प्रसन्न-सुहिणो माग्न आ।

नाम जपे ऐं जपाए थो-विद्या पढे ऐं पढाए थो, स्वामी शांति प्रकाश..

३-हित सत्संग थिये सुखदाई-हित पहुंचनि माई भाई-वाह जो रंग आ।

हित उपदेशक बि अचनि था-पाए छेरियूं भण्ट नचनि था-वाह सत्संग आ।

साई परमानन्द जो प्यारो आ-मोहिणी मूरत वारो आ-स्वामी शांति प्रकाश..

~~~ ६ भजन-४ ६ ~~~

तर्जः:-यशोमती मैया से बोले नंदलाला...

थलुः:-स्वामी शांति प्रकाश आहे संत सचारो।

कल्याण कैम्प जो दरवेश दुलारो, संत सचारो॥

१-मुहिणी आ मूरत जंहिंजी मिठडी आ ब्रोली।

दिनी राधेश्याम जी माता जंहिंखे लोली।

जपे ऐं जपाए वेठो नाम जो नारो, संत सचारो॥

२-दानिनि में दानी दाता निहठो निमाणो।

अब्रोङ्गनि गरीबनि जूं परणाए थो नियाणियूं।

दिये दान सभखे दाता भरियल आ भण्डारो, संत सचारो॥

~~~~~ ४ ~~~  
३-जोति अंदरि जी ब्रियो सत्गुरु सहारो ।  
मुश्की मिले थो सभसां अखिड़ियुनि जो तारो ।  
कुरे थो भलाई सभसां रही जगु में न्यारो, संत सचारो ॥

~~~ ५ ~~~ भजन-५ ~~~

तर्जः-साजन मेरा उस पार है....

थलुः-सत्गुरु शांति प्रकाश आ-सभनी सुखनि जी रास आ ।
१-सिंध जी धरती सूँहारी आ-चक जी नगरी भागुनि वारी आ ।
जिते जोगिनि जो वास आ-सभनी सुखनि जी रास आ ॥
२-धन धन पिता भागु वारो आ-माता जो भागु भी भलारो आ ।
तिनजे अडण थियो हुल्लास आ-सभनी सुखनि जी रास आ ॥
३-नंदपिण खां संतनि जे संग में-मन खे रंगियो राम रंग में ।
कयो भक्तिअ जो विकास आ-सभनी सुखनि जी रास आ ॥
४-सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी-सेवा कर्द सुखधाम जी ।
गुरु भक्ति कर्द खास आ-सभनी सुखनि जी रास आ ॥
५-सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द सां-नींहुं निभायो आनन्दकंद सां ।
थियो प्रभूअ दर पास आ-सभनी सुखनि जी रास आ ॥
६-सत्गुरु जी गादी वसाई आ-सत्संग जी मौज मचाई आ ।
प्रमिनि जी पूरी कर्द प्यास आ-सभनी सुखनि जी रास आ ॥
७-जोति मां जोति जग्नाए वियो-स्वामी हरिदासराम में समाए वियो ।
मनोहर अजब इतिहासु आ-सभनी सुखनि जी रास आ ॥

~~~~~ ॐ ॥ भजन-६ ॥ ~~~

तर्जः:-ये हरियाली और ये रास्ता...

थलुः-स्वामी शांति प्रकाश अवतार आ।

दीन दयालू अति कृपालू दीन बंधू दातार आ॥

१-सत्संग में मन वृत्ति लगाई-हरचूराम जी सेव कमाई।

टण्डे आदम गुरु भक्ति पाई-सत्गुरु टेऊँराम जी आसीस वताई।

दिठो सत्गुरु में सत्कर्तार आ, दीन दयालू....

२-नंदपण खां हरि नाम जपियाई-गुरु मूरत जो ध्यान धरियाई।

कण कण में भगवान दिठाई-घर घर प्रेम प्रचार कयाई।

कयो सत्नाम साखी उच्चार आ, दीन दयालू....

३-अहिड़ा जोणी विरला थींदा-हिन धरतीअ ते मुश्किल ईदा।

द्राणु सचो ढुड़नि खे दींदा-संगति खे सति राह द्रसींदा।

सदा मनोहर तिनिजी जयकार आ, दीन दयालू....

~~~~~ ॐ ॥ भजन-७ ॥ ~~~

तर्जः:-मुंहिंजो नींहुं लगो नंदलाल सां....

थलुः-स्वामी शांति प्रकाश महान आ-ज्ञान सचपच ही भगवान आ।

१-शंकर वांगे ध्यान लगाये-सत्नाम साखी नाम जपाए।

जंहिं तारियो सज्जो त जहान आ॥

२-विष्णू रूप थी पाले सभ खे-दीन गरीबनि महुताजनि खे।

दिनो अन्न धन ऐं सामान आ॥

३-ब्रह्मा थी जंहिं ज्ञान सुणायो-प्रेम प्रकाशी थी शान वधायो।

कयो वेदनि जो वखियाण आ॥

~~~~~ ४ ~~~~~ ४ ~~~~~

४-कृष्ण जीअं कर्द गायुनि सेवा-दिना सभिनि खे मिठड़ा मेवा ।

दिनो सभखे गीता जो ज्ञान आ ॥

५-राम ज्यां रखपाल थिया से-संतनि में सिरमोर हुआ से ।

दिनो सभखे जंहिं सन्मान आ ॥

६-दास अशोक छा महिमा ग्राए-चरननि में थो सीसु निवाए ।

जिन तां तन मन धन कुर्बान आ ॥

~~~~~ ५ ~~~~~ ५ ~~~~~

तर्जः:-पल पल याद पवे थो मूँखे....

थलुः:-परम ज्ञानी परम ध्यानी-सत्गुरु स्वामी शांति प्रकाश ।

१-पर उपकारी पर दुखहारी-पर सुखकारी सत्गुरु हो ।

परम उदारी परम भण्डारी-सत्गुरु स्वामी शांति प्रकाश ॥

२-दीन दयालू परम कृपालू-करे निहालू सत्गुरु थो ।

सब प्रतिपालू सब रखपालू-सत्गुरु स्वामी शांति प्रकाश ॥

३-परम प्यारो सदा न्यारो-सब जो सहारो सत्गुरु हो ।

सदा बहारो गुल गुलज्जारो-सत्गुरु स्वामी शांति प्रकाश ॥

४-सर्व स्नेही नाम जो नेही-दिल में वेही सत्गुरु वियो ।

अशोक आयो धारे देही-सत्गुरु स्वामी शांति प्रकाश ॥

~~~~~ ६ ~~~~~ ६ ~~~~~

तर्जः:-जन्म लही अजु जोही आयो...

थलुः:-सत्गुरु शांति प्रकाश प्यारो ।

हिन धरतीअ ते देह धरियाई, कृष्ण जो अवतारो ॥

१-रक्षा बंधन जे पावन ढींहं ते-रक्षा करण लाइआयो ।

मन मुंहिंजे खे मोहे छदियो जंहिं-मोहन मिलाइण वारो ॥

੨-ਪ੍ਰੇਮ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ੀ ਪੰਥ ਵਧਾਯੋ-ਪ੍ਰੇਮ ਜੋ ਝਾਣਡੋ ਝੁਲਾਯੋ।

ਸਭਿਨੀ ਖੇ ਜੰਹਿਂ ਪਾਰੁ ਦਿਨੋ ਹੋ-ਮਾਲਿਕ ਹੋ ਮਨਠਾਰੋ॥

੩-ਸਤਨਾਮ ਸਾਖੀ ਜਯ ਸ਼੍ਰੀ ਕ੃ਣ-ਮੰਤਰ ਜਾਪ ਜਪਾਯੋ।

ਦਾਨ ਦਿਆ ਜੋ ਟ੍ਰੇਈ ਮੂੰਖੇ-ਪੰਹਿੰਜੋ ਸ਼ਾਲ ਬਣਾਯੋ॥

੪-ਦੇਸ਼ ਵਿਦੇਸ਼ ਜਾ ਪ੍ਰੇਮੀ ਪੁਕਾਰਿਨਿ-ਅਚੋ ਤਵਹਾਂ ਹਿਕਵਾਰੀ।

ਦਰਸਨ ਸਾਂ ਮਨ ਥਿਧੇ ਥੋ ਪ੍ਰਸਨਨਿ-ਅਸ਼ੋਕ ਸੀਸ ਨਿਵਾਯੋ॥

~~~~~ ੴ ਭਜਨ-੧੦ ੴ ~~~

ਤੰਜ਼:-ਜਨਮ ਲਹੀ ਅਜੁ ਜੋਣੀ ਆਯੋ.....

ਥਲੁ:-ਜਨਮ ਢੀਂਹੁੰ ਜੋਣੀਅ ਜੋ ਮਨਾਯੋ।

ਦੇਹ ਧਰੇ ਧਰਤੀਅ ਤੇ ਸ਼ਵਾਮੀ, ਸ਼ਾਂਤਿ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਆ ਆਯੋ॥

੧-ਰਖਾ ਬੰਧਨ ਢੀਂਹੁੰ ਮੰਗਲ ਜੋ-ਸਾਕਣ ਪੂਰਣ ਮਾਸੀ।

ਸਿੰਧ ਦੇਸ਼ ਜੇ ਚਕ ਨਗਰੀਅ ਮੌਂ-ਪ੍ਰਭੂ ਪਾਣ ਪਥਾਰਿਯੋ॥

੨-ਪਿਤਾ ਆਸੂਦਾਰਾਮ ਆ ਜੰਹਿੰਜੋ-ਸੰਤ ਸੇਵੀ ਨਿ਷ਕਾਸੀ।

ਜੀਜਲ ਜੁਗਲ ਜਹੁਰ ਖਾਂ ਨਿਆਰੀ-ਤਹਿੰ ਘਰ ਸਤਗੁਰ ਆਯੋ॥

੩-ਨਂਡਿਪਣ ਖਾਂ ਘਰਖਾਰ ਤਾਗੇ-ਸਤਗੁਰ ਸ਼ਰਣੀ ਆਯੋ।

ਨਾਮ ਕਠੀ ਸ਼ਵਾਮੀ ਟੇੱਗਾਮ ਖਾਂ-ਪਾਣ ਜਪਿਧੀ ਏਂ ਜਪਾਯੋ॥

੪-ਗੁਰੁ ਕ੃ਪਾ ਸਾਂ ਮਿਟਧੀ ਅੰਧੇਰੋ-ਅਨਭਡ ਅਖਿਡਿਧੁੰ ਖੁਲਿਧੁੰ।

ਜਹੁਰ ਸਮੂਰੇ ਫਾਨੀ ਜਾਣੀ-ਸਬ ਖੇ ਨਾਮ ਜਪਾਯੋ॥

੫-ਸਤਗੁਰੁ ਸਰਵਾਨਨਦ ਸਾਹਿਬ ਜੀ -ਗਾਦੀ ਜੰਹਿੰ ਹੁਈ ਵਸਾਈ।

ਦੇਸ਼ ਵਿਦੇਸ਼ ਮੌਂ ਪ੍ਰੇਮ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ੀ-ਝਾਣਡੋ ਜੰਹਿੰ ਤ ਝੁਲਾਯੋ॥

੬-ਜਹੁਰ ਜੇ ਕਲਿਆਣ ਕਰਣ ਲਡੀ-ਸਤਗੁਰੁ ਆਯੋ ਅਵਤਾਰੀ।

ਮਿਠਡੀ ਭਾਣੀ ਭੋਲੇ ਸਭ ਸਾਂ-ਸਬ ਖੇ ਗਲੇ ਲਗਾਯੋ॥

~~~~~ ४ ~~~~~

~~~ ४ भजन-११ ४ ~~~

तर्जः:-दूलह दरियाह शाह मुंहिंजी...

थलुः-स्वामी शांति प्रकाश साई-हिरदे जोति जगाइजो ।

हिरदे जोत जगाइजो-साई मूँखे कीन भुलाइजो ॥

१-भवसागर मां पार करण लड़-साई तूं मल्हाहु आहीं ।

तरी न ज्ञाणां आउं अयाणी-ब्रांहं द्रई त उकारिजो ॥

२-लखें भलायूं आहिनि अव्हांजूं-ही भी नंगडो निभाइजो ।

साई पंहिंजीअ महिर मया सां-जन्म मरण खां छदाइजो ॥

३-पतित पावन नालो अव्हांजो-दया जी दृष्टि धारिजो ।

दासु ब्रह्मानन्द बार पुकारे-तंहिंखे कीन विसारिजो ॥

~~~ ५ भजन-१२ ५ ~~~

तर्जः-घर आया मेरा परदेसी..

थलुः-शांति प्रकाश साई चक वारा-जंहिंतां वजूं असीं ब्रलिहारा ।

१-ज्ञानियुनि में पूरण ज्ञानी-ध्यानियुनि में पूरण ध्यानी ।

भक्तिअ भाव जा भण्डारा ॥

२-जोग्रीअ जोग्र कमायो हो-ज्ञान जो दीप जगायो हो ।

साख द्रींदा सिजु चण्डु तारा ॥

३-जोग्री जीअ जो जियारो हो-हिन्द सिन्ध में हाकारो हो ।

जग्र में रहिया जग्र खां न्यारा ॥

४-महिमा साईअ जी न्यारी आ-ब्रह्मानन्द ब्रलिहारी आ ।

कामिल हुआ करणीअ वारा ॥

ਤਰ੍ਯ:- ਮੁਹਿੰਜੋ ਨੀਂਹੁ ਲਗੇ ਨੰਦਲਾਲ ਸਾਂ।

ਥਲੁ:- ਮੁਹਿੰਜੋ ਸਤਗੁ ਸ਼ਾਂਤਿ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਆ - ਜਹਿੰਜੋ ਦਰਸ਼ਨ ਸਬ ਸੁਖ ਰਾਸ ਆ।

੧- ਢੀਂਹ ਰਾਤ ਮਾਂ ਰਹਿਯੁਸਿ ਥੇ ਮਾਂਦੋ-ਦਿਆ ਕਰੇ ਗੁਰੂ ਸੰਗ ਮੌਅਦੋ।

ਦਿਨੋ ਗੁਰ ਮੰਤਰ ਜੋ ਖਾਸੁ ਆ॥

੨- ਸਤਗੁ ਜੋ ਜਹਿੰ ਨਾਮ ਕਮਾਯੁਮਿ - ਭਾਗ ਵਾਰੇ ਤਫਹਿੰ ਪਾਣ ਖੇ ਭਾਂਧੁਮਿ।  
ਦੁਖ ਦਰ੍ਦ ਸਮੂਰੋ ਨਾਸ ਆ॥

੩- ਸਤਗੁ ਜੋ ਜਹਿੰ ਵਰਤੁਮ ਸਹਾਰੇ - ਮਿਟਿਜੀ ਵਿਧਡੇ ਮਨ ਜੋ ਮੂੜਾਰੇ।  
ਥਿਧੇ ਹਿਰਦੇ ਮੌਅ ਤ ਹੁਲਾਸ ਆ॥

੪- ਸਤਗੁ ਜੀ ਸਦਾ ਸੇਵ ਕਮਾਯਾਂ - ਮਰਣ ਘੜੀਅ ਤਾਈ ਨੀਂਹੁ ਨਿਭਾਯਾਂ।  
ਬੀ ਮਨ ਮੌਅ ਨ ਕਾਈ ਆਸ ਆ॥

੫- ਕਥੋ ਆਸੀਸਾ ਭਾਉ ਭੇਨੁ - ਰਾਜੀ ਰਹੇ ਸ਼ਲ ਮੂੜੇ ਸਤਗੁ।  
ਇਹਾ ਪ੍ਰਭੂ ਮੁਹਿੰਜੀ ਅਰਦਾਸ ਆ॥

ਤਰ੍ਯ:- ਦਿਲ ਲੂਟਨੇ ਕੇਲੇ ਜਾਦੂਗਾਰ....

ਥਲੁ:- ਮੁਹਿੰਜੋ ਸਤਗੁ ਸ਼ਾਂਤਿ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਮਿਠੇ - ਸੰਸਾਰ ਸਜੇ ਮੌਅ ਸੂਹਾਰੇ ਆ।  
ਅਚੀ ਪੱਜੇ ਨੰਬਰ ਮੌਅ ਪਾਣ ਦਿਸੋ - ਮਨ ਮੋਹਿਣੇ ਮਨਿਦਰ ਤਜਾਰੇ ਆ॥

੧- ਜਿਤੇ ਸਤਸੰਗ ਜੀ ਸਦਾ ਗੰਗਾ ਵਹੇ - ਜੇਕੋ ਟੁਕ੍ਰੀ ਦਿਏ ਥੋ ਲਾਲ ਲਹੇ।

ਜੇਕੇ ਸਿਕ ਸਾਂ ਕਰਨਿ ਥਾ ਸੇਵਾ ਅਚੀ - ਥਿਧੇ ਬੁਲਨਦ ਤਹਿੰਜੋ ਸਿਤਾਰੇ ਆ॥

੨- ਪ੍ਰਭਾਤ ਜੋ ਕੇਵ ਕਖਿਆਨ ਹਲੇ - ਸਮਝਣ ਸਾਂ ਆਤਮ ਜਾਨ ਮਿਲੇ।

ਗੁਰੂ ਜਾਨ ਵੈਰਾਗੁ ਜੀ ਮੂਰਤ ਆ - ਏਂ ਭਕਿਅ ਜੋ ਤ ਭਣਡਾਰੇ ਆ॥

੩- ਜਿਤੇ ਵਰਿਧ੍ਯੂ ਮੇਲਾ ਖੂਬ ਮਚਨਿ - ਕਵਿ ਸੰਤ ਗੁਣੀਜਨ ਰੋਜ਼ ਅਚਨਿ।

ਮੋਟੇ ਸ਼ਵਾਲੀ ਖਾਲੀ ਕੀਨ ਹਿਤਾਂ - ਗੁਰੂ ਦੀਨ ਦੁਖਿਧਨਿ ਜੋ ਸਹਾਰੇ ਆ॥

੪- ਨਕੀ ਜਾਤਿ ਪੁਛਨਿ ਨਕੀ ਪਾਤਿ ਪੁਛਨਿ - ਝਾਟਿ ਨਾਮ ਸੰਦੋ ਥਾ ਦਾਨ ਦਿਧਨਿ।

ਏਂ ਸੋਹਮ ਸ਼ਬਦ ਜੀ ਸਮਝ ਢੁਈ - ਕਥੋ ਦੇਹ ਖਾਂ ਪ੍ਰਭੂ ਨਿਆਰੇ ਆ॥

~~~~~ ४ ~~~ भजन-१५ ~~~

तर्जः-जीजल मूंखे जोगीअड़ा....
 थलुः-सचो स्वामी शांति प्रकाश-प्रेम प्यालो पियाए वियो ।
 मुरझायल मन त खिलाए वियो ॥

- १-मिठी मिठी बोली बोले-खिड़की अनभड़ जी खोले ।
 आतम जो लाल लखाए वियो ॥
- २-दुई पंहिंजो प्रेम सचो-चयो राम रंग में रचो ।
 ज्ञान वैराग जगाए वियो ॥
- ३-सुणाए सत्संग सुठो-दुई कृष्ण नाम मिठो ।
 राधा मोहन सां मिलाए वियो ॥
- ४-करे देश-विदेश रटन-कयो सभनी खे परसन ।
 सत्‌नाम साखी जपाए वियो ॥
- ५-प्रभू मुंहिंजो भाग खुलियो-अहिड़ो सत्गुरु मूं मिलियो ।
 जम जी फास मिटाए वियो ॥

~~~~~ ५ ~~~ भजन-१६ ~~~

तर्जः-दिल लूटने वेले जादूगर....  
 थलुः-मुंहिंजो सत्गुरु शांति प्रकाश सदा-सभ संतनि में सोभारो आ ।  
 अजु जन्म उन्हीअ जो मलहायूं था-जो सिंधू नगर जो जियारो आ ॥

- १-आहे मुंहं में संदनि अद्भुत मणिया-जुण पाण कृष्ण जो रूप बणिया ।  
 गुण कहिड़ा गुणे कहिड़ा गुणियां-प्रेमिनि जो प्रान प्यारो आ ॥
- २-जेके शरण गुरुअ जी आया थी-थिया भाग उन्हनि जा सवाया थी ।  
 तिनि चार पदार्थ पाया थी-गुरु लोक बिन्ही रखवारो आ ॥

- ~~~~~
- 3-अचो भाऊर भेनरु सभई मिली-कयूं सेवा सत्गुरु जी त मिली।  
दींदो मुक्ति सभिनि खे खिली खिली-इहो भवजल तारण हारो आ॥
- 4-जंहिंजो भक्तिएँ ज्ञान विशाल अर्थई-जंहिंखे दीन दुखियनि जो ख्याल अर्थई।  
इहो अंदर ब्राह्मि लाल अर्थई-प्रभू सब सां मिलयल ऐं न्यारो आ॥

~~~ भजन-१७ ~~~

- तर्जः:-आधा है चंद्रमा रात आधी...
थलुः-स्वामी शांति प्रकाश अवतार आहे।
हू त कृपा कंदड करतार आहे, दातार आहे।
- १-आहे प्रेम अंदर में समायल-करिन कुर्ब में सब खे घायल।
जो हिन दर अचे, सो रंग में रचे-साई भक्तिअ भरियल भण्डार आहे॥
- २-जिन्हीं नींहुं रखियो आ नातो-हिन प्रीतम मां सब कुछ पातो।
तिनि खे काई कमी, तो कीन दिनी-मूँ अहिडो दिठो चमत्कार आहे॥
- ३-जद्हिं खोलिनि था ज्ञान भण्डारा-दुख दर्द मिटी वजनि सारा।
कोई वचन खणे, भागु वारो बणे-साईं सब सां मिलयल कान धार आहे॥

~~~ भजन-१८ ~~~

- तर्जः:-पखीअडा ओ पखीअडा.....  
थलुः-जोगीअडा ओ जोगीअडा, जोगीअडा ओ जोगीअडा।  
जोगीअडा तूं आउ मुंहिंजा जीअ जियारा।  
स्वामी शांति प्रकाश मुंहिंजे नेणन जा तारा॥

- १-टेऊँराम सुखन धाम तोते महिर आ कई।  
सर्वानन्द आनन्दकंद जी तोते नज्जर आ वई।  
गुरु भक्तिअ सां, भरियल हुआ, साईं सूंहारा॥

२-तो प्यार ऐं दुलार दई पंहिंजो आ कयो।

गरीबनि अनाथनि जो साईं घरड़ो आ भरियो।

हिरदे सां लग्नाए मुंहिंजा मेटियव मूँझारा ॥

३-कर्मयोगी जोणी वाह जो जुहिद तो कयो।

ज्ञान ध्यान विज्ञान सां संसो थे हरियो।

प्रेमा भक्तिअ द्वारा कयव बसंत बहारा ॥

४-स्वामी शांतिप्रकाश हुआ संत ज्ञानी।

सूंहा सिंधी कौम जा हुआ राणा रुहानी।

करुणा मैत्री प्रेम जा हुआ भरियल भण्डारा ॥

~~~~~ ॥ भजन-१९ ॥ ~~~~

तर्जः:-होठों से छूलो तुम....

थलुः:-मेरे सत्गुरु शांति प्रकाश, शरणागत मैं तेरी।

प्रभू आप मुझे मिल गये-खुल गई किस्मत मेरी ॥

१-अज्ञान अंधेरे से-दिन रात मैं भटक रहा।

मुझको ना सूझ पड़ी-माया मैं अटक रहा।

जब कृपा दृष्टि करी-कटी जन्म मरण फेरी ॥

२-प्रभू प्रेम प्रकाशी हो-तुम सब सुख रासी हो।

तुम ज्ञान के सागर हो-और योग अभ्यासी हो।

जप रोम रोम से राम-बन गई दुनिया चेरी ॥

३-गऊओं के रखवारे, वृद्धों को सहारे हो।

संतो के प्यारे हो-सत्गुरु के दुलारे हो।

करुणा करने मैं प्रभू-इक क्षण न करो देरी ॥

४-जो शरण तेरी आया-उसे पार है पहुंचाया।

प्रताप कहे गुरुवर-मैं तेरी शरण आया।

सदा गुन मैं गाता रहूं-चाहे दुनिया बने वैरी ॥



~*~ भजन-२० ~*~

तर्जः:-वादा न तोड़ तू वादा न तोड़....

थलुः:-पार लगाइ आहीं मल्लाहु।

स्वामी शांति प्रकाश आहीं शाहु.....

१-किश्ती पुराणी मुंहिंजी आहे विच वीर में।

लहिरूं ऐं लोद्वा आहिनि सीगर जे सीर में।

मुंखे द्वे तूं पंहिंजी पनाह....

२-शरण आए जी साईं लाज रखीं थो।

पार करे तूं सभजा कष्ट कटीं थो।

हिक तूं ही आहीं हमराहु.....

३-नारायण मां तो दर पलव झलींदुसि।

आश पुज्जाइजि मोटी मूरु न वेंदुसि।

रखियो शंकर आहे वेसाहु...

~*~ भजन-२१ ~*~

तर्जः:-आहियां आहियां मां पंहिंजे यार जी....

थलुः:-कजांइ पलव सभिनि जा पास तूं।

सत्गुरु स्वामी शांति प्रकाश तूं॥

१-संगति सज्जी तोखे अर्ज करे थी-झोल झाले तोखां महिर घुरे थी।

कजांइ कंहिंखे कीन निरास तूं...

२-तन में शक्ति मन में भक्ति-साईं सभ खे द्वे तूं सुमती।

दुख दर्द कजांइ सभ नास तूं....

३-ब्रचड़नि ते करि ब्राह्म तूं साईं-नियाणिनि जो भलो भागु बणाई।

पति पीरीअ जी रखु खास तूं.....

४-भव सागर मां पार कजांइ तूं-नंग नारायण जो रखजांइ तूं।

मजु शंकर जी अर्दास तूं....

લું કી લૈ

~~~ કી ભજન-૨૨ કી ~~~

તર્જઃ-મુંહિંજો ગુરૂ ત પીરનિ જો પીરુ આ...

થલુઃ- મુંહિંજો ગુરૂ ત ગરીબનિવાજ આ।

સ્વામી શાંતિ પ્રકાશ મહારાજ આ।

કંદો સંગતિ સજીઅ તે બ્રાઙ્ઘ આ।

સાગિયો હીઉ શ્યામ સુંદર-૨ મુંહિંજો સત્યુરુ...

૧-જંહિંજે ખ ખ મેં શ્રી કૃષ્ણ-જંહિંજે તન મન મેં મન મોહન।

પ્રેમ જો સાગર આ, મુંહિંજો સત્યુરુ...

૨-જંહિંજી બ્રાણીઅ મેં આનંદ આ-જ્ઞણ સાગિયો મુરલી મુકુંદ આ।

ભજન જી મૌજ કરે, મુંહિંજો સત્યુરુ...

૩-જંહિંખે ગાયું પયું ત પુકારિનિ-ખણી ન્યાણિયું નેણ નિહારિનિ।

સભિનિ જી સાર લહે, મુંહિંજો સત્યુરુ...

૪-જંહિંજો અમરુ નારાયણ નાલો-આહે શંકર શાન નિરાલો।

કરે આસીસ સદા, મુંહિંજો સત્યુરુ...

~~~ કી ભજન-૨૩ કી ~~~

તર્જઃ-દીદી તેરા દેવર દીવાના...

થલુઃ-પ્રભૂઅ જે નામ જા દીવાના-સ્વામી શાંતિ પ્રકાશ નિમાણ।

સચે ગુણ જ્ઞાન જા ખજાના-સ્વામી શાંતિ પ્રકાશ નિમાણ।

ગરીબનિ જે દિલ જા તરાના-સ્વામી શાંતિ પ્રકાશ નિમાણ।

૧-કર્મયોગી બણજી, કર્ડ નિષ્કામ ભક્તિ।

પ્રભૂઅ જા ફરિશતા, વચન મેં હુર્ડ શક્તિ।

સંતનિ જા હુઆ સાર્ડ બ્રથા બાન્હા, સ્વામી..

੨-ਡੇਈ ਪਧਾਰ ਅਹਿਡੋ, ਕਧੋ ਦਿਲਡੀ ਖਣੀ ਤੂਂ।
 ਮੋਹੇ ਮਨ ਸੰਗਤਿ ਜੋ, ਕਧੋ ਜਾਦੂ ਹਣੀ ਤੂਂ।
 ਸ਼ਮਾ ਤੂਂ ਅਸੀਂ ਤੁਂਹਿੰਜਾ ਪਰਵਾਨਾ, ਸ਼ਵਾਮੀ

੩-ਕਰੇ ਯਾਦ ਦੁਨਿਆ, ਤੁਂਹਿੰਜੁੰ ਲਖ ਭਲਾਈ।
 ਵਿਸਾਰਿਧ੍ਯੁੰ ਨਾਰਾਧਣ ਤੁਂਹਿੰਜੁੰ ਕੀਅਂ ਸਿਖਿਆਉੱ।
 ਸ਼ਙਕਰ ਤੁਂਹਿੰਜਾ ਲਖ ਸ਼ੁਕਰਾਨਾ, ਸਾਈ....

~~~~~ ਭਜਨ-੨੪ ~~~~

ਤਰ੍ਜ਼:- ਆ ਲੌਟਕੇ ਆਜਾ ਮੇਰੇ ਮੀਤ.....

ਥਲੁ:- ਅਚੁ ਸਤਗੁਰ ਸ਼ਾਂਤਿ ਪ੍ਰਕਾਸ਼- ਤੋਖੇ ਅਜੁ ਸੰਗਤਿ ਸਮਭਾਰੇ ਥੀ।  
 ਤੁਂਹਿੰਜੇ ਦਰਸਨ ਜੀ ਦਿਲ ਮੌਂ ਆ ਪਧਾਸ- ਸੰਗਤਿ ਖਣੀ ਨੇਣ ਨਿਹਾਰੇ ਥੀ॥

੧-ਤੁਂਹਿੰਜੇ ਪ੍ਰੇਮ ਮੌਂ ਥੀ ਮਾਂ ਦੀਵਾਨੀ-ਦੁਨਿਆ ਜਾ ਬੁੰਧਨ ਤੋਡਿਆਂ।  
 ਮੀਰਾਂ ਵਾਂਗੁਰੂ ਮਾਂ ਥੀਂਦਸਿ ਜੋਗਿਧਾਣੀ- ਨਾਤੋ ਗੁਰੂ ਤੋਸਾਂ ਜੋਡਿਆਂ।  
 ਹਾਣੇ ਦੇਰਿ ਨ ਕਰਿ ਘਨਸਥਾਮ- ਜੁਦਾਈ ਤੁਂਹਿੰਜੀ ਮਾਰੇ ਥੀ॥

੨-ਗਾਧ੍ਯੁੰ ਪਧ੍ਯੁੰ ਸਾਰਿਨਿ, ਗੋਢਾ ਪਧ੍ਯੁੰ ਗਾਰਿਨਿ- ਰਾਹੂੰ ਪਧ੍ਯੁੰ ਤੁਂਹਿੰਜੁੰ ਨਿਹਾਰਿਨਿ।  
 ਨਾਣਿਧ੍ਯੁੰ ਨਿਮਾਣਿਧ੍ਯੁੰ ਭਚਡਿਧ੍ਯੁੰ ਵੇਚਾਰਿਧ੍ਯੁੰ- ਪਲ ਪਲ ਪਧ੍ਯੁੰ ਤੋਖੇ ਪੁਕਾਰਿਨਿ।  
 ਅਚੀ ਸਤਗੁਰ ਲਹੁ ਤੂਂ ਸਮਭਾਲ- ਓਟ ਖਪੇ ਤੁਂਹਿੰਜੇ ਸਹਾਰੇ ਜੀ॥

੩-ਦੀਨਨਿ ਦੁਖਿਧਨਿ ਏਂ ਅਨਾਥਨਿ ਮੋਥਾਜਨਿ ਸਾਂ- ਬਾਬਲ ਤੋ ਕਈ ਹੁਈ ਭਲਾਈ।  
 ਵਿਛਡਿਧਲ ਮਿਲਾਇਝ, ਬਿਗਡਿਧਲ ਸੁਧਾਰਿਧਝ- ਪ੍ਰੇਮ ਜੀ ਕੰਸੀ ਕਜਾਈ।  
 ਤੁਂਹਿੰਜੋ ਵਚਨ ਹੁਧੋ ਵਰਦਾਨ- ਕਰਾਮਤ ਤੁਂਹਿੰਜੇ ਝਸਾਰੇ ਜੀ॥

੪- ਸ਼ਙਕਰ ਮੂੰਖੇ ਵਿਸ਼ਵਾਸ ਆਹੇ- ਅਜੁ ਸੰਗਤਿ ਜੀ ਅੜੀ ਮਜੀਂਦੇ।  
 ਨਾਰਾਧਣ ਅਗਰ ਜੇ ਹਾਣੇ ਨ ਈੰਦੇਂ- ਤ ਸੁਪਨੇ ਮੌਂ ਦਰਸਨ ਢੀਨੇਂ।  
 ਲਖ ਥੋੜਾ ਤੁਂਹਿੰਜਾ ਭਗਵਾਨ- ਪੈਜ ਰਖ੍ਯੁ ਪਹਿੰਜੇ ਪਧਾਰੇ ਜੀ॥

तर्जः:-मिलता है सच्चा सुख केवल...

थलुः:-मेरे सत्तुरु शांति प्रकाश सदा-रहे नाम चमकता सितारों में।

तेरे नाम की खशबू फैली है-दो जहां के चमन बहारों में॥

१-चाहे मुरली कितनी मधुर बजे-चाहे देवों के भी साज सजे।

नहीं जादू साईं की बाणी सा-कोयल की मीठी गुंजारों में॥

२-ज्यों ध्रुव है चांद के टुकड़े पे-त्यों तेज सजे तेरे मुखड़े पे।

नहीं नूर नूरानी सत्तुरु सा-इस गगन के चांद सितारों में॥

३-तेरे चरणों की रज पाकर के-गंगा भी पावन कहलाये।

मेरे गुरुवर सबसे न्यारे हैं-ज्यों कृष्ण हुए अवतारों में॥

४-जब तक ये चांद गगन में रहे-सूरज में जब तक अग्नि रहे।

मेरे सत्तुरु साईं अमर रहें-रहे गूंजी आवाज़ प्यारों में॥

तर्जः:-मेरे देश की धरती.....

थलुः:-मेरे सत्तुरु शांति प्रकाश सदा मन मन्दिर में मुसकाये,

मेरे मन को भाये।

आ जाओ मिलकर सारे यहां-सत्तुरु का जन्म मनाये॥

१-ऐसी मोहनी मूरत कहीं नहीं-जो देखे वो खो जाता है।

इक मीठी नज़र जो मिल जाये-तेरे चरणों का हो जाता है।

इतनी पावन है रज तेरी-हम नित नित सीस झुकाते हैं॥

२-जब भक्तों पे हैं कष्ट पड़े-तब रूप धरे तुम आते हो।

कभी राम बनो कभी कृष्ण ने-कभी नरसिंह तुम बन जाते हो।

अब साईं ने शिशु रूप लिया-ये देख देख हर्षाते हैं॥

~~~~~  
3-अब दिल में साईं ऐसे बसो-जैसे राम के मन में सीता है।
अब नैनों में साईं ऐसे बसो-जैसे कृष्ण के मुख में गीता है।
हर धड़कन पै हो नाम तेरा-ये सपना सभी सजाते हैं॥

~~~ भजन-२७ ~~~

तर्जः-आधा है चंद्रमां रात आधी.....  
थलुः-सत्त्वरु शांति प्रकाश प्यारे हैं-वो तो मेरी आँखों के तारे हैं,  
आधारे हैं.....

1-इक बार मिला जो उन्हों से-मिट गई प्यास जन्मों से।  
जब चरनी पड़ा, मेरा तन मन ठरा-मिटे मेरे सभी अंधियारे हैं॥  
2-पूरे विश्व को शोधके देखा-पर आप जैसा नहीं पेखा।  
आप राम बने, आप श्याम बने-आप मेरे लिये अवतारे हैं॥  
3-प्रताप सदा महिमा गाऊँ-पूरे विश्व को आज सुनाऊँ।  
मेरे जीवन हैं वो, मेरे सब कुछ हैं वो-मेरी बार बार नमस्कारे हैं॥

~~~ भजन-२८ ~~~

तर्जः-देखे तेरे संसार की हालत....
थलुः-सूरज बनकर जग में चमके-पूर्ण पुरुष भगवान।
स्वामी शांति प्रकाश महान... २

1-सिर पर पगड़ी बांधे ऐसे-राजा महाराजा हों जैसे।
देख देखकर प्रेमी हर्षे-फूले सकल जहान।
2-मुख से वाणी बोले ऐसी-मिश्री घोल पिलावें जैसी।
आनन्द की है बरखा बरसी-भीगे तन मन प्रान॥
3-देश विदेश दी शिक्षा ऐसी-मात पिता दे बढ़कर वैसी।
सत्‌नाम साक्षी मंत्र जपाकर-किया सर्व कल्यान॥
4-गुरु भक्ति में लीन थे ऐसे-महिमा तिन की गाऊँ मैं कैसे।
ऐसे प्यारे सत्त्वरु को हम-झुक झुक कर करें प्रणाम॥

~~~ ६ भजन-२९ ~~~

तर्जः:-मेरी छम छम बाजे पायलिया....

थलुः:-स्वामी शांति प्रकाश जी आए हैं-आज चहुं दिश आनन्द छाए हैं।

१-रक्षा बंधन के दिन गुरु जग में आए-चक नगरी की महिमा हम कैसे गाएं।

आसूदाराम पिता जुगल ब्राई माता-स्वामी टेऊराम गुरु पाए हैं॥

२-जबी माता निकली मां घबरा गई-कैसे जीवन कटेगा मिले मंजिल नई।

कई व्रत किये, जैसे सुख से जिये-हरचूराम के द्वार पे आए हैं॥

३-हरचूराम साहिब से जब विनती करी-भविष्य वाणी करी तब भाव भरी।

बड़ा संत बने गुण कौन गिने-यह तो जग को राह दिखाए हैं॥

४-विद्या पढ़ने को जब पंजाब गए-ज्ञानी जी बहुत प्रभावित हुए।

गुरु महिमा बढ़ी, विद्या ऐसी पढ़ी-कई गूढ़ अर्थ समझाये हैं॥

५-गुरु टेऊराम का दर्शन किया-स्वामी सर्वानन्द को प्रसन्न किया।

वो राजी हुए, दे गादी गए-गुरु भक्ति में तन मन भुलाए हैं॥

~~~ ६ भजन-३० ~~~

तर्जः:-मुंहिंजो गुरु त पीरन जो पीरु आ...

थलुः:-स्वामी शांति प्रकाश दयाल आ।

सदा नंग रखंदो नंगपाल आ, परम सुखकारी आहे, मुंहिंजो सत्गुरु...

१-जंहिं प्रेम जो प्यालो पियारियो-जंहिं ततल दिलियुनि खे ठारियो।

सदा सुखकारी आहे-मुंहिंजो सत्गुरु...

२-जंहिं मण्डल जो शान वधायो-पंहिंजी कला सां जगत झुकायो।

कामिल कलाधारी आहे-मुंहिंजो सत्गुरु...

३-लख थोड़ा तंहिंजा आहिनि-अजु भी पिया नंगडो निभाइनि।

लीला तिन न्यारी आहे-मुंहिंजो सत्गुरु...

४-निर्बल जो साई ब्रल आ-ब्रलु तिनि जो श्याम अटल आ।

भक्त हितकारी आहे-मुंहिंजो सत्गुरु...

~~~ ਭਜਨ-੩੧ ~~~

ਤਰ੍ਯ:-ਮੁਹਿੰਜੋ ਦਾਰੂਂ ਦਵਾ ਤੁਹਿੰਜੋ ਦੀਦਾਰੂ ਆ....

ਥਲੁ:-ਸ਼ਵਾਮੀ ਸ਼ਾਂਤਿ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਸੁਖਨ ਰਾਸ ਆ।

ਜਹਿੰਜੇ ਦਰਸਨ ਸਾਂ ਥੀਂਦੋ ਦੁਖਨ ਨਾਸ ਆ॥

੧-ਮੰਗਲ ਰੂਪ ਆਹਿਨਿ ਥਾ ਮੰਗਲ ਕਰਨਿ।

ਕਟੇ ਪਾਪ ਪਤਿਤਨ ਜਾ ਪਾਵਨ ਕਰਨਿ।

ਜਹਿੰਕਲਿਮਲ ਜੀ ਕਲਨਾ ਕਈ ਸਾਫ ਆ, ਸ਼ਵਾਮੀ..

੨-ਵਿਦਾ ਥਾ ਸੇਖਾਰਿਨਿ ਬ੍ਰਹਮਜ਼ਾਨ ਜੀ।

ਮਿਟਾਏ ਛਦਿਨਿ ਊੱਦਹਿ ਅਜ਼ਾਨ ਜੀ।

ਦਿਨੋ ਆਤਮ ਸ਼ਵਰੂਪ ਜੋ ਅਭਿਆਸ ਆ, ਸ਼ਵਾਮੀ....

੩-ਸਤਖਾਂਗ ਕਰਨਿ ਥਾ ਸਰਸ ਐਂ ਸਰਲ।

ਦਿਨਿ ਪ੍ਰੇਮ ਵਾਰੇ ਪਾਲੋ ਭਰਿਧਿਲ

ਜਹਿੰਜੇ ਪਿਧਣ ਸਾਂ ਥੀਂਦੋ ਉਲਾਸ ਆ, ਸ਼ਵਾਮੀ....

੪-ਹਦਰਮ ਤੁਹਿੰਜੋ ਦਰਸਨ ਮਾਂ ਦਿਲ ਮੌਕਾਂ ਕਿਧਾਂ।

ਜਪੇ ਨਾਮ ਤੁਹਿੰਜੋ ਮਾਂ ਪਾਰ ਥਿਧਾਂ।

ਫਕਤ ਮੁਹਿੰਜੇ ਮਨ ਮੌਕੇ ਇਹਾ ਪਾਸ ਆ, ਸ਼ਵਾਮੀ....

~~~ ਭਜਨ-੩੨ ~~~

ਤਰ੍ਯ:-ਆਧਾ ਸਾਂਤ ਸੁਜਾਨ....

ਥਲੁ:-ਸਤਗੁਰ ਸ਼ਾਂਤਿ ਪ੍ਰਕਾਸ਼, ਦਰਸ ਢੇ ਮੂੰਖੇ।

੧-ਦਰਸਨ ਤੁਹਿੰਜੋ ਆ ਦੁਖਹਾਰੀ-ਮੇਟੇ ਛਡੇ ਥੋ ਮਨ ਜੀ ਮੂੰਝਾਰੀ।

ਹਰਦਮ ਢੇਈ ਹੁਲਾਸ, ਦਰਸ ਢੇ ਮੂੰਖ, ਸਤਗੁਰ....

੨-ਮੂਰਤ ਤੁਹਿੰਜੀ ਮੰਗਲ ਕਾਰੀ-ਦਰਸਨ ਸਾਂ ਥੀ ਥਿਧੇ ਬਹਾਰੀ।

ਰਹੇ ਨ ਦੁਖ ਜੋ ਵਾਸ-ਦਰਸ ਢੇ ਮੂੰਖੇ, ਸਤਗੁਰ...

੩-ਵਚਨ ਅਵਹਾਂਜਾ ਸ਼ਕਿਅ ਵਾਰਾ-ਜਿਨ ਖਿਧਾਂ ਤਿਨ ਭਾਗ ਭਲਾਰਾ।

ਸੁਖੀ ਸੇ ਭਾਰਹਾਂ ਮਾਸ-ਦਰਸ ਢੇ ਮੂੰਖੇ, ਸਤਗੁਰ....

੪-ਨਜ਼ਰ ਅਵਹਾਂਜੀ ਨੂਰ ਇਲਾਹੀ-ਹਰਦਮ ਸਭ ਸਾਂ ਕਰੇ ਭਲਾਈ।

ਕਾਟੇ ਜਮ ਜੀ ਫਾਸ-ਦਰਸ ਦੇ ਮੁੰਖੇ, ਸਤਗੁਰ....

੫-ਦੀਨ ਦਿਆਲੂ ਦਾਤਾ ਆਹੀं-ਦਿਆ ਅਵਹਾਂਜੀ ਸਭ ਤੇ ਸਦਾਈ।

ਦਿਆ ਘੁਰੇ ਥੋ ਦਾਸ-ਦਰਸ ਦੇ ਮੁੰਖੇ, ਸਤਗੁਰ....

~~~ ॥ ਭਜਨ-੩੩ ॥ ~~~

ਤੜ੍ਹ:- ਸੰਤ ਸਚਾ ਸੇ ਪਰਮੇਸ਼ਵਰ ਜਾ.....

ਥਲੁ:- ਸ਼ਵਾਮੀ ਸ਼ਾਂਤਿ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਪਧਾਰੇ-ਵਾਹ ਜੀ ਮੌਜ ਮਚਾਏ ਵਿਧੋ।

ਵਾਹ ਜੀ ਮੌਜ ਮਚਾਏ ਵਿਧੋ-ਸਭ ਖੇ ਮਸ਼ਤ ਬਣਾਏ ਵਿਧੋ।।

੧-ਸਤਸੰਗ ਜੋ ਸਰਦਾਰ ਸ਼ਵਾਮੀ-ਸਾਰ ਸਚੀ ਸਮਝਾਏ ਵਿਧੋ।

੨-ਹਰਦਮ ਹਰਹੰਥ ਮੇਲਾ ਲਹਾਏ-ਪਾਣ ਮੌਜ ਮੇਲ ਕਰਾਏ ਵਿਧੋ।

੩-ਦੇਸ਼ ਵਿਦੇਸ਼ ਜੋ ਸੈਰੂ ਕਧਾਈ-ਸਾਜਨ ਸਭ ਖੇ ਭਾਏਂ ਵਿਧੋ।

੪-ਏਕਤਾ ਜੋ ਉਪਦੇਸ਼ ਫਿਨਾਈ-ਵੇਰੁ-ਵਿਰੋਧ ਮਿਟਾਏ ਵਿਧੋ।

੫-ਸ਼ਾਂਤੀਅ ਜੀ ਹੋ ਸ਼ਮਾ ਸ਼ਵਾਮੀ-ਸ਼ਾਂਤੀ ਸਬੁਰੁ ਸਿਖਾਏ ਵਿਧੋ।

੬-ਪ੍ਰੇਮ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਮਣਡਲ ਜੀ ਸ਼ਾਖਾ--ਸ਼ਹਰ ਸ਼ਹਰ ਫੈਲਾਏ ਵਿਧੋ।

੭-ਅਮਰਾਪੁਰ ਖਾਂ ਆਧੋ ਸਤਾਰੁ-ਅਮਰਾਪੁਰ ਮੌਜ ਸਮਾਏ ਵਿਧੋ।

੮-ਦਾਸ ਦਿਲੀਪ ਤੇ ਸਤਾਰੁ ਸ਼ਵਾਮੀ-ਮਹਿਰ ਜੋ ਹਥਡੇ ਘੁਮਾਏ ਵਿਧੋ।

~~~ ॥ ਭਜਨ-੩੪ ॥ ~~~

ਤੜ੍ਹ:- ਆਧਾ-ਆਧਾ ਥੀ ਸੰਤ ਸਨੇਹੀ..

ਥਲੁ:- ਸ਼ਵਾਮੀ ਸ਼ਾਂਤਿ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਸੂਹਾਰੇ-ਮੁਹਿੰਜੋ ਕਾਮਿਲ ਸਾਈ ਕੁਰੰ ਵਾਰੇ।

੧-ਸਾਜਨ ਮੁਹਿੰਜੋ ਸਿਕ ਵਾਰੇ-ਦੇ ਸਭ ਖੇ ਪ੍ਰੇਮ ਭਾਰੇ।

ਪੁਛੇ ਹਾਲ ਅੰਦਰ ਜੋ ਸਾਰੇ, ਸ਼ਵਾਮੀ....

੨-ਦੀਨ ਦਰੀ ਦੁਖਵਾਰਾ-ਅਚਨਿ ਜੇਕੇ ਸ਼ਰਨ ਪਧਾਰਾ।

ਕਰੇ ਤਿਨ ਜੋ ਭਾਗੁ ਭਲਾਰੇ, ਸ਼ਵਾਮੀ.....

३-भरम भोला भजनि भारी-द्वियनि सिख्या समझवारी।
कनि अंदर सभ जो उजारो, स्वामी.....
४-द्वियनि सुमती कटनि कुमती-कटे कमती करनि मुक्ती।
कनि पार था भव जल भारो, स्वामी....

~~~ ॥ भजन-३५ ॥ ~~~

तर्जः:-जीअं वणई तीअं जप तूं राम.....  
थलुः-सत्गुरु स्वामी शांति प्रकाश-साजन मुंहिंजो संत सचारो।  
१-कोमल चित हो दीन दयालू-चंदन सम शीतल हो सुखालू।  
सभ सां जंहिंजो प्रेम हो खास-साजन मुंहिंजो....  
२-सरल स्वभाव सभिनि सां प्रीती-न्याज्जी निमाणो निर्मल विरती।  
हरदम जंहिं कयो प्रेम प्रकाश-साजन मुंहिंजो....  
३-विनयी विवेकी वीरु विज्ञानी-अंतरमुखी ऐं गुणी ज्ञानी।  
दूर कयो जंहिं देह अधियास-साजन मुंहिंजो....  
४-कण-कण में दिठो कृष्ण कन्हाई-सभ जीवन सां करनि भलाई।  
बियाईअ जो जंहिं कयो विनाश-साजन मुंहिंजो....  
५-संत सच्चो हो गुणनि भण्डारो-शरणागत जो हो रखवारो।  
कंहिंखे कीन कयो हो निराश-साजन मुंहिंजो....

~~~ ॥ भजन-३६ ॥ ~~~

तर्जः:-सत्गुरु खे थी सारियां.....
थलुः-सत्गुरु शांति प्रकाश-सुमति द्वियो साईं सची।
१-काम ब्रली आ द्वाढो सतायो-हया शर्म ऐं मर्म विजायो।
कटियो काम कुवास, सुमति द्वियो...
२-क्रोध आ द्वाढो शोर मचायो-जीअ मुंहिंजे खे जंहिं त जलायो।
कर्यो क्रोध खे नास, सुमति द्वियो....

~~~~~ ॥ ३ ॥ ~~~  
३-लोभ करे कई पाप कमायमि-पाप करे पंहिंजो पाण विजायम।

पटियो पाप जी पाश, सुमति द्वियो....

४-मोह मुङ्गायो मन मुंहिंजे खे-दुखी कयो आ तन मुंहिंजे खे।

मेटे मोह जी फास, सुमति द्वियो.....

५-अहंता वारी अकड़ ओरांगे-धर्म, कर्म सभ वयो वरांगे।

हटायो होद्ध ऐं हास, सुमति द्वियो.....

~~~~~ ॥ ३७ ॥ ~~~

तर्जः:-सचो साईं सतराम पर उपकारी.....

थलुः:-स्वामी शांति प्रकाश सुजानी-मुंहिंजो रहिबर रूप रुहानी।

१-चक नगरीअ में देही धरियाऊँ-सिंधुनगर में मंदरु अदियाऊँ।

प्रेम प्रकाशी झण्डो झुलायऊँ-हुयो निर्मल नूर नूरानी, स्वामी.....

२-प्रेम दया जो सागर सतुरु-दीन दयालू हुयडो दिलबर।

रूप माधुरी जंहिंजो मनोहर-हुयो लालण लाल लासानी, स्वामी....

३-पाप पाखण्ड जी पाड़ पटियाऊँ-सत् धर्म जी नींव विधाऊँ।

शुभ कर्मनि जी राह द्रसियाऊँ-हुयो सदा गुणन जी खाणी, स्वामी...

४-प्रेम संदो प्रचार कयाऊँ-बियाईअ जो व्यभिचार कढियाऊँ।

हर हिक खे पिण प्यार द्विनाऊँ-हुयो संत सचो सैलानी, स्वामी.....

५-गायुनि जो गोपाल हो स्वामी-न्याणियुन जो नंगपाल हो स्वामी।

निधरि जो आधार हो स्वामी-हुयो साजन सभ सां साणी, स्वामी....

६-दिलीप जो हाणे अर्ज अघायो-चरननि में चित्त मुंहिंजो लगायो।

मोह ममत खां साईं बचायो-कयो मूंते इहा महिबानी, स्वामी.....

तर्जः:- मुरली ओ मुरली, मुरली मोहन जी...^{०८} सिक में ओ सिक में....

थलुः:- सत्गुरु ओ सत्गुरु, सत्गुरु स्वामी शांति प्रकाश प्यारा।

हुया संत सचारा-जीअ जा जियारा ॥

१- दिनो प्यार सभ खे पियारे प्रेम प्यालो ।

कयो हो सभिनि खे साजन सुखालो ।

वियें मौज मचाए, मिटाए मूँझारा, जीअ जा....

२- भजी भेद भ्रांतियूं-दिनो ज्ञान सभ खे ।

कटियो क्रोध सभ जो-कयो शांत सभ खे ।

हुयें संत साजन सभ जा सहारा, जीअ जा.....

३- दानी दिलावर-साजन सबाझो ।

हुयें दीन दयालू दातार वाह जो ।

करें वयें सभिनि जा भाग भलारा, जीअ जा.....

४- करे महिर सभ ते-कयो प्यार सभ सां ।

हणी मेला हर हंथ-जोड़ी तार हरि सां ।

थियें साणी सभ सां-संत सोभारा, जीअ जा.....

तर्जः:- भैया मेरे राखी के बंधन.....

थलुः:- सत्गुरु स्वामी शांति प्रकाश महान आ ।

साजन संत सुजान आ, सुजान आ ॥

१- सभ सां हले थो प्रीति वधाए-न्याजी निमाणो निर्मल आहे ।

कंदो सभिनि जो सन्मान आ, सत्गुरु स्वामी.....

२- दानी दाता गुणी ज्ञानी-माण हूंदे आहे निरमानी ।

दींदो सभिनि खे मान आ, सत्गुरु स्वामी....

~~~~~ ४ ~~~~~

३-कण-कण में द्विसे कृष्ण प्यारो-प्यार करे थो सभ सां भारो।  
रखिंदो सभिनि जो ध्यान आ, सत्गुरु स्वामी.....

४-जेको दर ते आयो स्वाली-कीन वयो हितां कदहिं खाली।  
दाता वदो दयावान आ, सत्गुरु स्वामी.....

५-दुखियनि जा दुख दूर करे थो-दिलीप ते भी महिर करे थो।  
ऊँचो जंहिंजो शान आ, सत्गुरु स्वामी.....

~~~ ५ ~~~ भजन-४० ~~~

तर्जः:-तेरी राहों में खड़े हैं दिल थामके....

थलुः:- स्वामी शांति प्रकाश महान आ-जंहिं मोहियो सज्जो त जहान आ।
बोले मिठड़ा थो बोल-जीअं मिसरीअ जो घोल,
बुधाए ज्ञान अनमोल-कढियो भरम ऐं भोल।
कयो सभ खे जंहिं मस्तान आ-जंहिं मोहियो....

१-सत्संग में थो मौज मचाए-रिमझिम राणल रास रचाए।
दींदो सुहिणी सज्जण समझाण आ-जंहिं मोहियो....

२-रहिणी ब्रहिणी आ रसवारी-कहिणी सहिणी आ जसवारी।
जंहिंजो दुनिया सज्जीअ में शान आ-जंहिं मोहियो...

३-आये वये खे मान द्विये थो-नंदे वदे सां पाण मिले थो।
जंहिंजो चित हरदम निरमान आ-जंहिं मोहियो....

४-शरन पयनि जी सार लहे थो-दोखियुनि जा दुख दूर करे थो।
दाता वदो दयावान आ-जंहिं मोहियो.....

५-सारी दुनिया जसु थी ग्राए-सभ सां वयें तूं नींहुं निभाए।
दिनो सभखे सुठो सन्मान आ-जंहिं मोहियो..

६-दिलीप जो साईं दर्द मिटायो-जन्म मरण जी जेल छदायो।
कंदो मुश्किल खे आसान आ-जंहिं मोहियो.....

तर्जः:-ईचक दाना मीचक दाना.....

थलुः:- सत्गुरु मुंहिंजो दीन दयालू-अंतर्यामी आहे, महिर वसाए।

स्वामी शांति प्रकाश प्यारो-हरहंधि हाजिर आहे, महिर वसाए।

१-सच्चो सुखधाम आ-दींदो विश्राम आ।

लाहे दुख दोखियुनि जा-पूरण कंदो काम आ।

जेको पुकारे श्रद्धा धारे-तंहिंजो वारो वज्ञाए, महिर वसाए।

२-हीणनि हमराह आ-बे वाहन जी वाह आ।

दीननि जो दाता साई-दया जो दरियाह आ।

जन्म-जन्म जा दुखडा मेटे-सुखडा द्वे थो ठाहे, महिर वसाए...

३-जेको जिते याद करे-साई तंहिंखां कीन परे।

पूरो विश्वास धरे-तंहिंजो कम रास करे।

शरणागत जी सत्गुरु साई-हरदम लाज बचाए, महिर वसाए...

तर्जः:-संत सच्चा से परमेश्वर जा....

थलुः:-सत्गुरु शांति प्रकाश स्वामी-मोहींदु मनठारु हुयो ॥

१-सूरत जंहिंजी सोभ्या वारी-सुख दींदु सुखसारु हुयो ॥

२-दर्शन सां दुख दूर थिया थे-दिव्य जंहिंजो दीदारु हुयो ॥

३-ज्ञानी ज्ञाता ध्यानी ध्याता-रातो राम मंझार हुयो ॥

४-सम संतोषी धीरज धारी-गुणनि संदो भण्डारु हुयो ॥

५-दीन दयालू दानी दिलबर-दीनन जो दातार हुयो ॥

६-सरल सुधीरु सियाणो सुहिणो-साजन सभ जो सारु हुयो ॥

७-वीरु विज्ञानी ब्रह्मज्ञानी-दींदो ब्रह्म विचार हुयो ॥

८-सेवा सुमरन सादगी सत्संग-संतनि जो सरदार हुयो ॥

९-राणो रसीली रहणीअ वारो-अमृत रस जी धार हुयो ॥

१०-मुर्शिदि मुंहिंजो मिठडो मालिक-कंदो सभिन सां प्यारु हुयो ॥

११-दास दिलीप जो दाता दिलबरु-महिर भरियो मनठारु हुयो ।

~~~~~ ॥ भजन-४३ ॥ ~~~

तर्जः:-सारी सारी रात तेरी याद सताए...  
थलुः:-सत्गुरु शांति प्रकाश जी आए।

चहुदिश आनंद मंगल छाये रे, मंगल छाये, सत्गुरु...  
१-वीर विज्ञानी ज्ञानी ज्ञाता-अंतर्मुख रहते हैं राता।  
हरदम बैठे नाम ध्याये रे-नाम ध्याये, सत्गुरु...  
२-कथनी करनी एक हैं जिसकी-रहनी बहनी नेक हैं जिसकी।  
सरस सरल समरूप समाए रे-समरूप समाए, सत्गुरु...  
३-सेवा साधन खूब सिखाते-सत्संग अमृत जाम पिलाते।  
सर्व जीवों को सुख पहुंचाये रे-सुख पहुंचाये, सत्गुरु....  
४-जीवन सारा मधुर है जिसका-प्रेम पिलाना काम है उसका।  
दास दिलीप क्या महिमा सुनाये रे-महिमा सुनाये, सत्गुरु...

~~~~~ ॥ भजन-४४ ॥ ~~~

तर्जः:-जरा सामने तो आओ छलिये.....
थलुः:-स्वामी शांति प्रकाश अवतार हो-हूत कृपा कंदु करतार हो।
धारे देह आयो सिंध देश में-कयो धर्म संदो प्रचार हो ॥

१-रक्षाबंधन दींहं चक नगरीअ में-जन्म बठी साईं आयो हो।
नर नारियुनि थे खुशियूं मनायूं-आनन्द चहुदिशि छायो हो।
थियो जन्म साण जयकार हो-आयो संत सचो सुखकार हो- धारे देह...
२-बचपन खाँ ई संतनि संग में-नाम नशे में मस्त रहियो।
घर गृहस्थ जी त्यागे तमन्ना-वेही जंहिं हरिनाम जपियो।
कयो सफल पंहिंजो हर श्वास हो-पातो पूरन पद अविनाश हो, धरे देह...
३-सत्य धर्म जी सिख्या सुणाए-सभ कंहिंजो ते सुधार कयो।
वाट सची सभिनी खे बुधाए-अधमनि जो उद्धार कयो।
दिनो शुभ गुण ऐं वीचार हो-इहो मुहिब मिठो मनठारु हो, धरे देह....

~~~ ६ भजन-४५ ~~~

तर्जः:-आओ प्यारा श्रद्धा वारा...

थलुः:-सत्गुरु शांति प्रकाश सदा-दियनि था सभ खे ज्ञान अथाह।

१-मूरत मधुर निमाणी आ-मिठडी जंहिंजी ब्राणी आ।

ज्ञान भक्तिअ जी खाणी आ-रोज बुधाइनि नई कथा॥

२-सरल सरस समदृष्टि आ-तारी सारी सृष्टि आ।

कृपा जी कई वृष्टि आ-लाहे छद्दिनि था सभ जी व्यथा॥

३-नाम जपाइन था हरदम-दूर करनि था सभ जा ग्राम।

रास करनि था सभ जा कम-महिर करिनि था सभ जे मथां॥

४-शरण पयनि खे कीन छद्दिनि-प्यारु डेई तंहिं पंहिंजो कनि।

आदर डेई साण गद्दिनि-देखारिन था प्रेम पथा॥

~~~ ७ भजन-४६ ~~~

तर्जः:-जिस दिल में बसा था प्यार तेरा...

थलुः:-स्वामी शांति प्रकाश उदार आहे-गुरुदेव मिठो मनठारु आहे।

१-जेको प्रेम प्यालो प्यारे थो-दुख दर्द हिरदे जा टारे थो।

ऐं लेखो जम जो वारे थो-इहो संत सचो सुखकार आहे॥

२-जेको विषयनि खां त बचाए थो-सभ दुर्गुण दोष छद्दाए थो।

ऐं सत्मार्ग में लग्नाए थो-इहो कंदो सभिनि जो उद्धार आहे॥

३-जेको नाम हरीअ जो जपाए थो-सभ पापनि मेल मिटाए थो।

ऐं आवागमन हटाए थो-इहो दया संदो दातार आहे॥

४-जेको सभ जो अर्ज अघाए थो-मरीजनि जो मर्ज मिटाए थो।

ऐं सभ जो कर्ज कटाए थो-इहो हर कंहिं जो आधार आहे॥

५-जेको रांवल रंग रचाए थो-मन मोहन साण मिलाए थो।

ऐं सभ जी आश पुज्जाए थो-इहो कृष्ण जो अवतार आहे॥

~~~॥४७॥ भजन-४७ ॥~~~

तर्जः:-मन मोहन गिरधारी ब्रलहारी जावां दर्शन तेरियां.....

थलुः:-स्वामी शांति प्रकाश आहिन से संत उदारी-संत उदारी पर उपकारी ॥

१-घर घर में जंहिं नाम जपायो-पाप कटिन था भारी ।

२-सुतलनि खे जंहिं वजी जाण्यायो-सिख्या सुणाए सुखकारी ।

३-सत्संग साधन जंहिं त सेखारियो-ज्ञान करनि गुलज्जारी ।

४-शरन पयनि खे कीन छद्यियाऊँ-पार कयाऊँ भव भारी ।

५-दास दिलीप जो अर्ज इहो ई-रखजो शरण मंझारी ।

~~~॥४८॥ भजन-४८ ॥~~~

तर्जः:-जब तुम्हीं चले परदेश....

थलुः:-स्वामी सत्तुरु शांति प्रकाश सुखन जी रास, हुआ उपकारी ।

जंहिं तारी सृष्टि सारी....

१-जेको ज्ञानी वदो गुणवान हुयो-साईं माण हूंदे निर्माण हुयो ।

जंहिंमें निवडत न्याज्ज निहठाई सरलता भारी, जंहिं तारी....

२-जंहिं देश विदेश जो सैरु कयो-द्रेई नाम मिठो दुख दूर कयो ।

चाढे नाम नौका ते तारिया नर ऐं नारी-जंहिं तारी...

३-जंहिंमें भक्ति ज्ञान अपार हुयो-ऐं नंदे वदे सां प्यार हुयो ।

हुयो विश्व वंदनीय संत सचो सुखकारी, जंहिं तारी....

४-साईं दीनन जो त दयाल हुयो-जंहिंजो हिरदो वदो विशाल हुयो ।

जेको दया संदो दरियाहु दया जंहिं धारी, जंहिं तारी...

~~~~~ ४६ ~~~~~ भजन-४९ ~~~~

- तर्जः:-द्राढी सत्गुरु जी सिक आहे.....  
 थलुः:-स्वामी शांति प्रकाश सोभारो-आहे विश्व सज्जे जो प्यारो।  
 १-जंहिंजी मूरत मधुर निमाणी-मिठडी आ निर्मल वाणी।  
 आहे प्रेमियुनि जो त सहारो॥  
 २-जंहिंजी निवडत न्याज निशानी-आहे मुंह में संदनि पेशानी।  
 जंहिंजो हिरदो विशाल उदारो॥  
 ३-साई दाता दानी आहे-सभनी जी आश पुज्ञाए।  
 जंहिंजो भरियल आहे भण्डारो॥  
 ४-जंहिं मण्डल जो शान वधायो-घर-घर में नाम जपायो।  
 कयो सभ जो अंदर उजारो॥  
 ५-केद्दी महिमा साईअ जी आहे-सज्जो जग्नत पियो थो ग्राए।  
 जस जंहिंजो आहे भारो॥

~~~~~ ४७ ~~~~~ भजन-५० ~~~~

- तर्जः:-ऐ मेरे दिल ए नादां.....
 थलुः:-मेरे सत्गुरु शांति प्रकाश-देते आनंद परम हुलास।
 तेरा रूप मधुर महाराज-मन मेरे करो निवास॥
 १-तेरी अमृत रसधारा, हर लेती दुख सारा।
 सुख के तुम सागर हो, सुख देते हो भारा।
 करते मंगल बि का, मुद मंगलमय हो खास॥
 २-दुखियों के दर्दों को, तुम दूर भगाते हो।
 पतितों को पीड़ा से तुम मुक्त कराते हो।
 जो शरन पड़े तेरी, दुख हो गये उसके नाश॥

३-कलि पावन अवतारी, तुम भक्तन भयहारी ।
 तेरे कर्स्त्रणामय कृपा, भवपार करे भारी ।
 हे नाथ कृपा कर दो, रहे तव चरनन की आश ॥

४-भव भय भंजन-हारी, तुम सत्गुरु सुखकारी ।
 शरणागत की गुरुवर, करते हो रखवारी ।
 अब शरन पड़े तेरी, सब कारज करिये रास ॥

~~~ ५१ ~~~

तर्जः:-हम गीत सनातन गाएंगे.....

थलुः:-मेरे सत्गुरु शांति प्रकाश सदा-सब जीवन के हितकारी हैं ।  
 सब जीवन के हितकारी है-वो तो मूरत मंगलकारी हैं ॥

१-नाम तुम्हारा है सुखकारी-सभ जीवों की विपदा टारी ।  
 ताप क्लेश मिटाकर सबके-देते आनंद भारी हैं ॥

२-सत्य मार्ग के शिक्षक बनकर-शरणागत के रक्षक बनकर ।  
 दीन जनों के संरक्षक बन-सब की करे रखवारी हैं ॥

३-देश-विदेश में नाम जपाया-कर्म-योग का पाठ पढ़ाया ।  
 सेवा सुमरन सत्संग द्वारा-करते बाग बहारी है ॥

४-भक्त जनों के भार हटाते-भार हटाकर पार लगाते ।  
 पार लगाकर सार बताते-दिलीप जाये बलिहारी है ॥

ਤਰ੍ਯ:- ਦਿਲ ਕੇ ਅਰਮਾਂ ਆਸੁੰਓਂ ਮੌਂ ਬਹ ਗਿਆ....

ਥਲੁ:- ਸ਼ਵਾਮੀ ਸ਼ਾਂਤਿ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਸੁਖਨ ਜੀ ਰਾਸ ਆ।

ਜਾਂਹਿੰਜੇ ਦਰਸਨ ਸਾਂ ਦੁਖਨ ਜੋ ਨਾਸ ਆ॥

੧- ਕੇਈ ਜਨਮਨਿ ਖਾਂ ਹੁਧਸ ਭ੍ਰਮਨਿ ਭੁਲਯਲ।

ਭ੍ਰਮ ਭੋਲਨ ਜੋ ਕਟਿਧੋ ਜਾਂਹਿੰ ਫਾਸ ਆ॥

੨- ਮੋਹ ਮਮਤ ਜੇ ਜਾਲ ਮੌਂ ਜਕਿਡਿਧਲ ਹੁਧੁਸ।

ਜਾਨ ਖੰਜਰ ਸਾਂ ਕਪਿਧੋ ਜਾਂਹਿੰ ਪਾਸ ਆ॥

੩- ਦੋ਷ ਦੁਰ੍ਗੁਣ ਜੇ ਹੁਧੁਸ ਗਪ ਮੌਂ ਗਤਲ।

ਸਤਮਾਰ੍ਗ ਮੌਂ ਜਾਂਹਿੰ ਕਰਾਧੋ ਪਾਸ ਆ॥

੪- ਪਾਪ ਜੀ ਪੀਡਾ ਮੌਂ ਮਾਂ ਪਿਸਜੀ ਪਿਧੁਸ।

ਮੂੰ ਪਤਿਤ ਜੋ ਜਾਂਹਿੰ ਕਧੋ ਤ ਵਿਕਾਸ ਆ॥

੫- ਵਿ਷ਯਨਿ ਰੂਪੀ ਵਿਹੁ ਮੌਂ ਮਾਂ ਵਕਿਡਿਧਲ ਹੁਧੁਸ।

ਵਿ਷ਯ ਜੇ ਵਿ਷ ਜੋ ਕਧੋ ਤ ਹਾਸ ਆ॥

੬- ਭਵਸਾਗਰ ਜੀ ਭੀਡ਼ ਮੌਂ ਭੁਲਿਜੀ ਵਿਧੁਸ।

ਮੂੰ ਭੁਲਿਧਲ ਖੇ ਜਾਂਹਿੰ ਕਰਾਧੋ ਭਾਸ ਆ॥

੭- ਕਾਮ ਜੇ ਕੁਣਢੇ ਮੂੰਖੇ ਹੋ ਕਿਨੋ ਕਧੋ।

ਮੂੰ ਕਿਨੇ ਖੇ ਜਾਂਹਿੰ ਕਧੋ ਤ ਸੁਵਾਸ ਆ॥

੮- ਕ੍ਰਾਥ ਜੀ ਕਾਰੀ ਊੱਦਹਿ ਅੰਧੋ ਕਧੋ।

ਮੂੰ ਅੰਧੇ ਖੇ ਜਾਂਹਿੰ ਦਿਨੋ ਪ੍ਰਕਾਸ ਆ॥

੯- ਲੋਭਵਾਰੀ ਲਹਰ ਮੌਂ ਲੁਫਿਜੀ ਵਿਧੁਸ।

ਲਹਰ ਮਾਂ ਮੂੰਖੇ ਬਚਾਧੋ ਖਾਸੁ ਆ॥

੧੦- ਅਹੰਤਾ ਵਾਰੇ ਏਬ ਮੌਂ ਅਟਕੀ ਪਿਧੁਸ।

ਏਬਨ ਖੇ ਕਾਟੇ ਕਧੋ ਜਾਂਹਿੰ ਕਧਾਸ ਆ॥

੧੧- ਸ਼ਰਣ ਪਹਿੰਜੀਅ ਮੌਂ ਮੂੰਖੇ ਰਖਿਧੋ ਸਦਾ।

ਸ਼ਰਣਾਗਤ ਜੀ ਆਖਿਰੀ ਅਰਦਾਸ ਆ॥

~~~~~ ॥ भजन-५३ ॥ ~~~

तर्जः:-गम खाईंदें सुख पाईंदें.....
थलुः:-सुखकारी है दुखहारी है-सत्गुरु शांति प्रकाश जी ।

मेरे सत्गुरु शांति प्रकाश जी ॥

- १-माधुर्य मंगलरूप है-मंगलकारी है, अघहारी है-सत्गुरु.....
- २-पीड़ा पतितों की हरें-पीड़ाहारी हैं, पावनकारी है, सत्गुरु....
- ३-दीनों की दयनीय दशा-जिहं सुधारी है, दयाधारी है, सत्गुरु....
- ४-चित्त की चिंता चूर कर-दें बहारी हैं, गुलिजारी हैं, सत्गुरु...
- ५-भक्तों की भयता हरें-भयहारी हैं, अभयकारी हैं, सत्गुरु....
- ६-करूणामय कृपा सदा-रखते जारी हैं, अवतारी हैं, सत्गुरु...

~~~~~ ॥ भजन-५४ ॥ ~~~

तर्जः:-सत्गुरु जो दीदार कर मन.....  
थलुः:-सत्गुरु शांति प्रकाश मुंहिंजा, सत्गुरु शांति प्रकाश ।

देह धरे अजु आयो जग में, सभिन सुखन जी राश ॥

- १-चक नगरीअ जो भागु भलारो-जिते पथारियो सत्गुरु प्यारो ।  
गगन मण्डल में जय-जय थी वई गूंजियो सज्जो आकाश ॥
- २-जीजल जुगल जी कोख सहाई-आसूदेमल खे द्वियनि वाधाई ।

ब्राल गोपाल बुढा नर नारियूं-कनि पिया मंगल हुलास ॥

- ३-नण्डपणि खाँ ई नाम जपियाऊँ-संग साधन जो खूब कयाऊँ ।  
कृपा वारी कणी पाताऊँ-थियड़ो ज्ञान विकास ॥
- ४-सत्गुरु टेऊँराम स्वामी-गुरु मिली वयो अंतर्यामी ।  
सेव कमाए खूब रिझाये-पातो पद् अविनाश ॥

५-सत्गुरु सर्वानन्द सूंहारो-नींहुं निभायो तंहिं सां सारो ।  
श्रद्धा धारे कयाऊँ जुहारे-कृपा थी वई खास ॥



६-सत्युरु जीआ गादी वसाई-सत्संग सुन्दर मौज मचाई।  
 मौज मचाए मेला मलहाये-हरदम दिनो उल्लास॥

७-शरणागत खे कीन छद्यियाऊँ-नाम द्रेई तंहिं पार कयाऊँ।  
 भवजल भारी चाढे-चाढी-काटी जम जी फास॥

~~~ भजन-५५ ~~~

तर्जः:-अमां रहिजी कीअं ईदो.....

थलुः:-स्वामी शांति प्रकाश महान।

धरतीअ ते धरे अवतार, आयो पाण कृष्ण भग्वान॥

१-ईहो आहे श्याम सुन्दर, करे लीला मन मोहे,
 वसियो सभिनी जे अंदर, स्वामी शांति प्रकाश....

२-सुहिणी सत्युरु जी सूरत, दिली दिल खे अचे आनन्द,
 मन मोहींड़ मूरत, स्वामी शांति प्रकाश....

३-आहे गायुन जो गोपाल-ग्यारस जो व्रत धरे,
 नंग पाले थो नंगपाल-स्वामी शांति प्रकाश...

४-साई दीन दयालू आ-लहे सार सभिनि जी थो,
 प्रेमियुनि प्रतिपालू आ, स्वामी शांति प्रकाश....

५-लख थोरा मां भायां-नाहे ताकत का राजू,
 गुण ग्राए छा ग्रायां-स्वामी शांति प्रकाश....

~~~ भजन-५६ ~~~

तर्जः:-सौ बार जन्म लेंगे.....

थलुः:-स्वामी शांति प्रकाश बाबा-तोखे दिलडी थी याद करे।  
 सारियां सिक मां सत्युरु-अखियुनि में आबु भरे॥

१-हुएं सत्युरु तूं मनठारु-दिनो दिल जो सचपच प्यारु।  
 साई तोखां सिवाय ब्रियो को-नाहे अहिडो को दिलदार।  
 नाहे तो जहिडो आधार-कीअं मन ही धीरु धरे॥

~~~~~**४**~~~~~

२-सभिनी जी सार लधी-सभु दुखड़ा मिटाया तो ।
 माउ-पीउ जियां सभजा-कुल कष्ट हटाया तो ।
 कई सभ जे मथां कृपा-हथ आसीसा जो धरे ॥

३-तो केद्वा कष्ट सही-गुरु नाम प्रचार कयो ।
 सुहिणो उपदेश ड्रेई-भस वागर पार कयो ।
 बुधी मिठिड़ा वचन तुंहिंजा-सभिनी जी दिलड़ी ठेरे ॥

~~~**५**~~~ भजन-५७ ~~~

तर्जः:-करती हूं तुम्हारा व्रत मैं....

थलुः:-बाबा शांति प्रकाश स्वामी-थो स्वाल कयां मां ।  
 शल धर्म सां रहिजी अचे-अर्दास कयां मां....२  
 करि महिर तूं मूंते-करि ब्राज्ञ तूं मूंते...

१-झोली झली आ खाली-मूं तुंहिंजे द्वार ते ।  
 कर रहम मूंते दाता-कर ब्राज्ञ ब्रार ते ।  
 सभकी मालूम आ तोखे-कहिड़ो हाल कयां मां, शल धर्म..

२-मालिक तूं मुंहिंजो आहीं-आहियां तुंहिंजे पन्हारे ।  
 मेटिजि मंदायूं मुंहिंजूं-रखिजांड शरण मंझारे ।  
 आहीं दीन दयालू दाता-नमस्कार कयां मां, शल धर्म....

३-जहिड़ो मां आहियां तहिड़ो-आहीं मुंहिंजो तूं धणी ।  
 करि दोह माफ तूं मुंहिंजा-ड्रेई कृपा जी कणी ।  
 दास हरी ब्रली भी तो दरि-सदा सेव कयां मां, शल धर्म...

तर्जः:-याद आ रही है, तेरी याद आ रह है....

थलुः:-मुंहिंजो सतगुरु आहे आयो-मुंहिंजो बाबल आहे आयो।

सत्गुरु शांति प्रकाश अचण सां-आनन्द आहे छायो॥

१-सखर ज़िले चक ग्रोठ में-जनम वठी आहे आयो।

सावण राखी पूनम-उणवीह सौ सत में ज्ञायो।

माता जुगल आसूदेमल जे घर में आहे आयो॥

मुंहिंजो सत्गुरु....

२-नंदपण खां ई वृत्ति-जंहिंजी नाम में हुई समाई।

सत्गुरु जी कृपा सां-आहे कामिल कई कमाई।

मस्त थियो हरको बाबल ते-पंहिंजो चाहे परायो॥

मुंहिंजो सत्गुरु....

३-उल्लास नगर में सुहिणो-सत्गुरु जो मंदरु बणायो।

मिली संतनि ऐं प्रेमिनि सां-हर साल मेलो मल्हायो।

हरको दर तां खाई वजे-ना खाली कंहिंखे मोटायो॥

मुंहिंजो सत्गुरु....

४-जो आयो श्रद्धा धारे-हिन बाबल जे त द्वारे।

नाम दुई थो सत्गुरु तंहिंजा-कुलझे कार्ज संवारे।

हरीअ ब्रलीअ भी हिन दर ते आ-पंहिंजो सीस निवायो॥

मुंहिंजो सत्गुरु...

तर्जः:-कोई रंगील सपनों में आके.....

थलुः-कैम्प पंजे जा संत प्यारा-मोहिणी मूरत मधुर निमाण।

जेको अचे तंहिंजा कनि जयकारा-वाह वाह स्वामी शांति प्रकाश ॥

१-ज्ञान गुणन जी खाणी आ-मान हूँदे निर्मानी आ।

रखी विश्वास जेको अचे थो-तंहिंजूं बाबल झोलियूं भरे थो।

दुखियनि जा दुख दूर करे थो-वाह वाह स्वामी....

२-जेठ महिने में वर्सी लगाइनि-सत्युरु टेऊँराम जो जसु ग्राइनि।

भारत भर जा प्रेमी अचनि था-पाये छेरियूं भग्नत नचनि था।

मीहं महिर जा सभ ते वसनि था-वाह वाह स्वामी....

३-नाहिरी महिने में मेलो मचे-वाह जो रंग थो खूब रचे।

केई साधू संत सच्चारा-बोलिनि वाणी अमृत धारा।

जेको अचे तंहिंजा भरिनि भण्डारा-वाह वाह स्वामी...।

४-हरी ब्रलीअ ते दया कजो-सदा शरन पंहिंजी रखिजो।

सारी संगत थी हथड़ा जोड़े-कुमति किनीअ खे कढिजो कोरे।

बाझ कजो मूंते हथ घोरे-वाह वाह स्वामी....

तर्जः:-मेरा रंग दे बसंती चोला....

थलुः-हीउ सत्युरु टेऊँराम आ-हीउ सत्युरु, हीउ सत्युरु टेऊँराम आ।

हीउ सत्युरु टेऊँराम आ....२

१-जो बि आयो दर ते स्वाली, थींदो मालामाल आ।

आशाऊँ सब पूरियूं करे थो, वाह जो हिन जो कमाल आ।

सिक श्रद्धा रखी जो बि अचे थो तंहिंजो पूरन काम ॥

हीउ सत्युरु.....



२-सत्गुरु टेऊँराम जी जोती, सर्वानन्द में समाई हुई।

सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द बि, वाह जो मौज मचाई हुई।

देश-विदेश में नाम जपायो-साखी ऐं सत्नाम॥

हीउ सत्गुरु....

३-स्वामी सर्वानन्द जी शक्ति-शांति प्रकाश में आई आ।

सत्गुरु स्वामी शांति प्रकाश बि, वाह जी कई कमाई आ।

संगत विच में ईएं सूंहनि पिया, गोपियुनि में घनश्याम॥

हीउ सत्गुरु.....

४-स्वामी शांति प्रकाश आसीसा-देव प्रकाश ते आहे कई।

साणी रहिणी साणी कहिणी-साणी आहे सेवा कई।

सत्गुरु जो जस शल वधाए-सदा जपाए नाम॥

हीउ सत्गुरु....

५-आहे आस अंदर में हिकड़ी-सत्गुरु शाल पुजाईदो।

महिर करे हिन दास गरीब जा-दुखड़ा दर्द निवारींदो।

हरि-बलीअ जो स्वाल इहो आ-सेवा कयूं निष्काम॥

हीउ सत्गुरु....

६-हर छंछर हर चोथ ते सत्गुरु-दर जो पलउ पाराईदो।

सत्गुरु साई महिर करे तंहिंजा-कुलई कार्ज बणाईदो।

हरि बलीअ जो अर्ज इहो आ-जपियूं सदा तुंहिंजो नाम॥

हीउ सत्गुरु.....

### ~~~◆◆ भजन-६१ ◆◆~~~

तर्जः:-स्वामी सर्वानन्द फकीरु अथव.....

थलुः:-मुंहिंजो शांति प्रकाश गुरु पूरो आ-जंहिं भारु खंयो त समूरो आ॥

१-वाह-वाह में पियो वक्त टपे-दुख क्लेश में ना मनडो तपे।

पेरई रसना तुंहिंजो नाम जपे-कर्या याद त हाजरां हजूरो आ॥

~~~~~ ੴ ॥ ੳ ~~~~~

२-ਮुंहिंजो दुख त सधनि था कीन सही-अचनि घड़ीअ-घड़ीअ केर्ड रूप ठही।
कद्हिं अंदर ब्राह्मि कद्हिं घर पहुंची-कर्या याद त ज्ञाहिरां ज्ञहूरोआ ॥

३-रहां बुनल अब्हांजे भाणे ते-हथ रखजो बाबा निमाणे ते ।

कयो दया दृष्टि अणज्ञाणे ते-गुरुदेव जो अहिड़ो शहूरो आ ॥

४-हथ जोड़े थो अर्दास कर्या-तब्हांजे चरन कमल जी आस कर्या ।
तब्हांजे दर्शन जी मन में प्यास कर्या-मुंहिंजो सत्गुरु अहिड़ो सूरो आ ॥

~~~ ੴ भजन-६२ ॥ ~~

तर्जः:-दम मारो दम मिट जाये गम....

थलुः:-मनायो खुशियूं जन्म दिन जूं-धन धन आ, स्वामी शांति प्रकाश ॥

१-ज्ञानिनि में आहे ज्ञानी-सूरत आ जंहिंजी निमाणी ।  
दुनिया जा प्रेमी अचनि था-बुधण संतनि जी वाणी ॥

२-वाह जो आ मंदरु साईंअ जो-ज्ञान सुखा पुरीअ जो निजारो ।  
जेको अचे थो खाए-पंहिंजो हुजे चाहे धारियो ॥

३-अज्ञु था जन्मदिन मनायूं-घर घर में वरियूं वाधायूं।  
झूमनि था हिरदा सभेर्ड-सीरा मालपुड़ा खाऊँ ॥

४-हरि बुलीअ जा सत्गुरु स्वामी-आहीं तूं अंतर्यामी ।  
कष्ट कुलई तूं कटजां-अंग संग थीजां साणी ॥

~~~ ੴ भजन-६३ ॥ ~~

तर्जः:-लाख छुपाओ छुप न सकेगा....

थलुः:-महिमा स्वामी शांति प्रकाश जी-केर सधंदो ग्राए ।
सच पुछो अवतार साईं -भगुवान कृष्ण जो आहे ॥

१-सूरत जंहिंजी लासानी आ-मन खे मस्त बणाए ।
वचननि जी वर्खा करे-साईं अमृत सब खे पियाए ।
धर्म सनातन वेद शास्त्र जी-वाणी नित थो बुधाए ॥

੨-ਰਾਮ ਜਿਧਾਂ ਮਰਦਾ ਜਹਿਂਮੇ-ਕ੃਷ਣ ਜਿਧਾਂ ਕਰਮਯੋਗੀ।
 ਵੇਦਨਿ ਮੌਂ ਵਿਦਾਨ ਆ ਸਾਈ-ਯੋਗਿਨਿ ਮੌਂ ਆ ਯੋਗੀ।
 ਭੁਲਿਧਿਲ ਭਿਟਿਕਿਧਿਲ ਬੇਵਾਹਨਿ ਜੀ-ਰੋਸ਼ਨ ਰਾਹ ਬਣਾਏ॥

੩-ਹਿਨ ਦਰ ਤੇ ਸ਼੍ਰਦਧਾ ਸਾਂ ਜੇਕੋ-ਅਚੇ ਥੋ ਸੀਸ ਨਿਵਾਏ।
 ਬਿਗਡਿਧਿਲ ਭਾਣ ਬਣਾਏ ਪੱਹਿੰਜੋ-ਮਨ ਵਾਂਛਿਤ ਫਲ ਪਾਏ।
 ਦਾਸ ਤਾਰੇ ਚਵੇ ਗੁਲਿਹ ਇਨ੍ਹੀਅ ਮੌਂ-ਕੋਈ ਸ਼ਕ ਨਾ ਆਹੇ॥

~~~~~ ਭਜਨ-੬੪ ~~~

ਤੜ੍ਹਾ:-ਬਾਰ ਬਾਰ ਤੋਹੇ ਕਧਾ ਸਮਝਾਊੱ...  
 ਥਲੁ:-ਸਤਗੁਰ ਤੋਖੇ ਅੜ੍ਹ ਕਧਾ ਥੋ-ਬੁਧੁ ਤੂੰ ਮੁਹਿੰਜੀ ਪੁਕਾਰ।  
 ਸ਼ਾਂਤਿ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਬਾਬਾ-ਭੇਡੋ ਤੂੰ ਪਾਰ ਉਤਾਰ॥

੧-ਪੰਜਨਿ ਵੇਖਿਧੁਨਿ ਆਹੇ ਕਵਾਯੋ-ਤਹਿੰਖਾਂ ਮੂੰਖੇ ਬਚਾਯੋ।  
 ਹਥਡਾ ਢੇਈ ਮੂੰਖੇ ਹਿਸਥ ਜਾ-ਬਾਬਲ ਪਾਰ ਲਗਾਯੋ।  
 ਐਥ ਤ ਮੂੰ ਮੌਂ ਆਹਿਨਿ ਇਲਾਹੀ-ਨਾਹੇ ਜਿਨ ਜੋ ਸ਼ੁਮਾਰ॥

੨-ਦ੍ਰੋਪਦੀਅ ਜੀ ਲਾਜ ਬਚਾਈ-ਜਿਅਂ ਕ੃਷ਣ ਅਵਤਾਰ।  
 ਨੰਗਡੋ ਮੁਹਿੰਜੋ ਨੰਗੀ ਢਕਿੰਦੇ-ਬਾਬਾ ਬਖ਼ਾਣਹਾਰ।  
 ਜਹਿਡੋ ਆਹਿਧਾਂ ਤਹਿਡੋ ਤੁਹਿੰਜੋ-ਰਕਾ ਕਜਈਂ ਹਰਵਾਰ॥

੩-ਸਾਲਨ ਖਾਂ ਮਾਂ ਸ਼ਵਾਲੀ ਆਹਿਧਾਂ-ਦਰਸਨ ਪੱਹਿੰਜੋ ਪਸਾਈ।  
 ਦਰਸਨ ਹਾਣੇ ਦੇ ਬਾਬਲ ਧਾਂ-ਪਾਣ ਵਟਿ ਮੂੰਖੇ ਘੁਰਾਈ।  
 ਹਰਿ ਭੁਲੀ ਭੀ ਦਰ ਤੁਹਿੰਜੇ ਜਾ-ਆਹਿਨਿ ਨਂਡਾ ਭਾਰ॥

तर्जः:-होठों से छूलो तुम.....OR ऐ मेरे दिल ए नादां...  
 थलुः:-स्वामी शांति प्रकाश प्यारा-मूँखे तुंहिंजो सहारो आ।  
 दुनिया में तोखां सवाइ-कोई ब्रियो न पनारो आ ॥

१-हिक महिर तुंहिंजी घुरिजे-जीअं नाम जपींदो रहां।  
 कयां दुखियनि जी शेवा-तुंहिंजा गीत बि गुर्ईदो रहां।  
 आहीं सब कुछ तूं मुंहिंजो-कयो तो छो किनारो आ ॥

२-दुनिया जी गरिदिश में-मां ढाढो मुंझियलि आहियां।  
 हिक प्रीती तुंहिंजी खपे-दिल में मां इहो चाहियां।  
 हरदम बाबल मूँखे-तुंहिंजो आधारो आ ॥

३-आहे अर्ज इहो मुंहिंजो-हिति हुति तूं राखो थिजांड।  
 जीअं हलींदीअ पंहिंजी हलां-मोथाजी न कंहिंजी द्विजां।  
 हरि-ब्रलीअ जे लाइ तूं ई-साईं कृष्ण कारो आं ॥

तर्जः:-स्वामी टेऊँराम महाराज, कयो साथ....  
 थलुः:-मुहिंजा सत्गुरु शांति प्रकाश-कयो महिर असां ते खास ॥

१-हिक मोह ममत कटिजो-सदा नाम जो दान द्विजो।  
 द्विजो संतनि मांहिं निवास-मुहिंजा....

२-ब्रियो सत्गुरु द्विजो सुमती-कढो कुबुध्या ऐं कुमती।  
 द्वियो आत्म जो प्रकाश-मुहिंजा....

३-टियों दान इहो चाहियां-गुण गोबिंद जा ग्रायां।  
 कयो पूरन मन जी आस-मुहिंजा....

४-हरि-ब्रली पुकारे थो-ब्रधी हथड़ा ब्राढाए थो।  
 कजो अंत समय में पास-मुहिंजा....

तर्जः:- भेनरु मुंहिंजो प्रेम लगो....

थलुः:- जन्मदिन सत्गुरु जो-गुरु शांति प्रकाश जो।

जेके सिक सां मनाईंदा-भागु पंहिंजो बणाईंदा ॥

१-सत्गुरु जी सूरत सुठी-लगी मुंहिंजे मन खे मिठी।

तंहिंखे दिल में विहारींदा-भागु पंहिंजो बणाईंदा ॥

२-सत्नाम साखी जपियो-जय श्री कृष्ण चओ।

प्रेम रखी जे पुकारींदा-भागु पंहिंजो बणाईंदा ॥

३-सत्संग में आनन्द अचे-मस्तीअ में हरको नचे।

पल-पल जे राम ध्याईंदा-भागु पंहिंजो बणाईंदा ॥

४-गांधीनगर मौज मचे-संगति ठाहे टोलियूं अचे।

लद्दुं पेड़ा जे खाईंदा-भागु पंहिंजो बणाईंदा ॥

५-हरि-बुली साईं मूं पातो-सचो सत्गुरु सुआतो।

सभई सत्गुरु संभालींदा-भागु पंहिंजो बणाईंदा ॥

तर्जः:- छोड़ बाबुल का घर....

थलुः:- बाबा गरीबनिवाज़, कजो पूरन काज-गुरु शांति प्रकाश।

१-मुंहिंजो बाबल जंहींते थो महिर करे-तंहिंजा हिक ई पल में भण्डार भरे।

जेको रखे विश्वास-तंहिंजी पुज्जाए थो आस-गुरु शांति प्रकाश...

२-जहिडो मां तहिडो दास तुंहिंजो आहियां-निमाणा-नेण खणी थो तोद्दे निहारियां।

रखो शरम मंझार-कटियो कष्ट करतार-गुरु शांति प्रकाश....

३-ऐबन सां भरियल ऐबदार आहियां-ब्रधी ब्राह्म ब्रई तोखे थो ब्रदायां।

करि रहिम मूंते-करि ब्राझ मूंते-गुरु शांति प्रकाश....

४-बाबल तूं आहीं रहिमत जो धणी-तो में आ करामत सभिनि खां घणी।

कम रास कजो-मूळे पास कजो-गुरु शांति प्रकाश....

५-करे दास ब्रलि थो इहाई आज्ञी-ब्रधी हथड़ा ब्रेई हरि करे थो न्याज्ञी।

शल रहिजी अचे-मौज मन में मचे-गुरु शांति प्रकाश....

तर्जः:-मिलती है जिंदगी में मुहब्बत कभी-कभी....

थलुः-साईं शांति प्रकाश सत्गुरु-दर्वेश दुलारा।

गांधीनगर में आइया-प्रभूअ जा प्यारा ॥

१-राहूं जिन जूं निहारियमि-सालनि खां थे संभारियमि।

अजु मुंहिंजे घर से आया-साहिब सचारा ॥

२-श्री स्वामी टेऊँराम जी-गादीअ जा सरदार।

सखावत जा आहिनि से धणी-हिंद-सिंध में हाकारा ॥

३-स्वामी शांति प्रकाश नालो-मिसरीअ खां बी मिठो।

नज्जरुनु सां था निहाल कनि था-प्रानन जा प्यारा ॥

४-संगति जा आहिनि स्वामी-हीणनि जा थी हामी।

हरि ब्रलीअ जे आहिनि सदा-जीअ जा जियारा ॥

तर्जः:-सैयां दिल के बड़े ही कठोर निकले ....

थलुः-मुंखे सत्गुरु जी सदा तार आहे,

स्वामी शांति प्रकाश जी तंवार आहे।

१-स्वामी शांतीअ जो अवतार हुयो-ऐं दीननि लाइ दातार हुयो।

जंहिंखे ब्रार-ब्रुढनि लाइ प्यार आहे-मूळे तंहिं बिन कीन करार आहे॥

२-मूळ शहर ऐं रस्ता ग्रोल्हया सभई-पर कान मूळे आ खबर पई।

जली आहे विछोडे में जान वई-तंहिंजी याद मूळे हरवार आहे॥

३-स्वामी अयोध्या वारो राम आहे-ऐं गोकुल जो घनश्याम आहे।

ऐं सभिनी लाइ सुखधाम आहे-जंहिंजो नालो कृष्ण करतार आहे॥

~~~~~ ॥ भजन-७१ ॥ ~~~

तर्जः:दिल दिया है जां भी देंगे.....

थलुः-अजु जन्म दिन था मनायूं स्वामी शांति प्रकाश जो ।

अचो खुशीअ जो गीत ग्रायूं-स्वामी शांति प्रकाश जो ॥

१-सुन्दरु सांवण जो महीनो-राखी ब्रंधन पूनम रात ।

सुख द्वियण लाइ आयो साजन-आहे कृष्ण जी सौगात ।

सभ करे दीदार खुश थिया-स्वामी शांति प्रकाश जो ॥

२-नन्दपणि खां ई जंहिंजो नातो-संतनि सां आहे बणियो ।

रहिणी-कहिणी ऐं सहिणीअ सां-साजन सभ खे आ वणियो ।

सारी दुनिया जसु थी ग्राए-स्वामी शांति प्रकाश जो ॥

३-संतनि में सिरमोर साजन-संगति जो बणियो श्रृंगार ।

ऐब कंहिंजा कीन द्विसनि था-सभिनि सां कनि प्रेम-प्यार ।

जग में जय-जयकार आहे-स्वामी शांति प्रकाश जो ॥

४-हरि-ब्रलीअ ते आहे कृपा-अहिडे सत्गुरु देव जी ।

रहिजी अचे शल तोड़ ताई-सदा कयूं तंहिं सेव ही ।

संगति भी थी प्यार चाहे-स्वामी शांति प्रकाश जो ।

~~~~~ ॥ भजन-७२ ॥ ~~~

तर्जः:-महिफल में जल उठी शमा.....

थलुः-दींहुं सभाग्नो अजु आ सरतियूं-सभई हली दीदार कयो ।

स्वामी शांति प्रकाश आ जन्मियो-सभई निमी नमस्कार कयो ।

१-गुलन-फुलन जा हार गले में-मस्तक तिलक लगायो हली ।

चरन धोई चरनामृत पाए-मुख सां गीत बि ग्रायो हली ।

धूप दुखाए आरती उतारे-सभई मिली जयकार कयो ॥

२-प्रेम सां जंहिं अजु पूजियो सत्गुरु-तन-मन-धन सब भेट धरे ।

भव सागर जे लहर-लोटन खां सत्गुरु तंहिं झट पार करे ।

धन-धन भागु उन्हनि जा भेनरु-जिन सत्गुरु सां प्यार कयो ॥

३-सत्युरु जहिडो सज्जन न ब्रियो को-लोक टिन्हीं-टिन्हीं कालनि में।  
महिमा मुख सां कहिडी चवे प्रभू-पढ़ी दिसो त पुराणनि में।  
कथन करण जी ताकत नाहे-सत्युरु जो उपकार कयो॥

~~~॥ भजन-७३ ॥~~~

तर्जः:दिल के अरमां आसुओं में बह गए.....
थलुः:-आश आ सभ जे अंदर में आश आ।
जीअ जियारो स्वामी शांति प्रकाश आ॥
१-साधु ब्रह्माण जो करे सन्मान जो।
रूप अतिथीअ में दिसे भगुवान जो।
दीन दुखियनि ते कंदो सो क्यास आ॥
२-प्यार देई सभ खे जो पंहिंजो करे।
सभ मथां थो महिर जो हथड़ो धरे।
जंहिंजे हृदे में हरीअ जो वास आ॥
३-गायुनि जो राखो अथव गोपाल ही।
बुढनि-बेवाहनि जो आ रखपाल ही।
जो कटींदो ज्ञान सां जम फास आ॥

~~~॥ भजन-७४ ॥~~~

तर्जः:-चांदी की दीवार न तोड़ी.....  
थलुः:-स्वामी शांति प्रकाश सचपच-कृष्ण जो अवतार हो।  
कृष्ण वांगुरु रास रचाई-मुहिबु मिठो मनठार हो॥  
१-मोहन वारी मुरली वज्जाए-सभखे मस्त बणाए छद्दियो।  
मिठड़ा-मिठड़ा ब्रोल ब्रुधाए-प्रेम जो मण्डल मचाए छद्दियो।  
मेला लग्गाए रास रचाए-वाह जो रंगड़ो रचाए छद्दियो।  
ज्ञाणी-ज्ञाणणहार सत्युरु-मुहिबु मिठो मनठार हो॥

~~~~~॥ 43 ॥~~~~~

~~~~~

ੴ ਕੈ ਲੈ

2-ਕੁਨਦਾਵਨ ਮੌਗ ਗੋਪਿਨਿ ਸਾਂ ਜੀਅਂ-ਕ੃ਣ ਰਾਸ ਰਚਾਯੋ ਹੋ ।  
 ਸਾਹੀ ਲੀਲਾ ਕਰਣ ਲਾਡ ਸਤਗੁਰ-ਪਾਣ ਪ੍ਰਗਟੁ ਥੀ ਆਯੋ ਹੋ ।  
 ਪ੍ਰੇਮ ਜੋ ਪਾਲੋ ਪਿਧਾਰੇ ਸਭਿਨਿ ਖੇ-ਜਧਸ਼੍ਰੀ ਕ੃ਣ ਜਪਾਯੋ ਹੋ ।  
 ਦਿਲ ਜੋ ਠਾਰਣ ਹਾਰੋ ਸਤਗੁਰ-ਸ਼ਾਂਤੀਅ ਜੋ ਭਣਡਾਰ ਹੋ ॥

3-ਕਹਿਡਾ-ਕਹਿਡਾ ਗੁਣ ਮਾਂ ਗਾਧਾਂ-ਸ਼ਵਾਮੀ ਸ਼ਾਂਤਿ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਜਾ ।  
 ਬ੍ਰਹਮ ਜਾ ਜਾਤਾ ਪਰਮ ਸੁਜਾਤਾ-ਸੁਖ ਢੀਂਡੁ ਸੁਖ ਰਾਸ ਜਾ ।  
 ਅਹਿਡੋ ਸੁਹਿਣੋ ਸਤਗੁਰ ਪਾਏ-ਭਾਗ ਖੁਲਿਯਾ ਹਰਿਦਾਸ ਜਾ ।  
 ਤਾਗੀ ਵਿ਷ੁਨਿ ਖਾਂ ਵੈਰਾਗੀ-ਦਿਲ ਘੁਰਿਯੋ ਦਿਲਦਾਰ ਹੋ ॥

~~~

ੴ ਭਜਨ-੭੫

~~~

ਤੜ੍ਹ:-ਕੋਸਾ ਕੋਹਰ ਖਣੀ ਹਲਿਯੋ...  
 ਥਲੁ:-ਸਤਗੁਰ ਸ਼ਾਂਤਿ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਜਹਿਡੋ-ਮਨ ਵਿਰਲੋ ਕੋ ਥੀਂਦੋ ।  
 ਅਹਿਡੋ ਪ੍ਰੇਮ ਜੋ ਸਾਗਰ ਕੋ-ਬਿਧੋ ਈਂਦੋ ਨਾ ਈਂਦੋ ॥

੧-ਹੋ ਨੂਰਾਨੀ ਨੂਰ ਹੀ-ਚਮਕਂਡੁ ਪੇਸਾਨੀ ਹੀ ।  
 ਸੂਰਤ ਸੁਹਾਨੀ ਹੀ -ਜੋ ਸਭ ਖੇ ਸੁਖ ਢੀਂਦੋ ॥

੨-ਛਾ ਮੌਜ ਮਚਾਇਨਿ ਥਾ-ਸੁਧਿ-ਬੁਧਿ ਵਿਸਰਾਇਨਿ ਥਾ ।  
 ਹੂ ਤ ਬ੍ਰਹਮ ਲਭਾਇਨਿ ਥਾ-ਸਦਾ ਮੁਖਡੋ ਰਹੇ ਟਿੱਦੋ ॥

੩-ਗਾਮ ਦੂਰ ਭਜਾਇਨਿ ਥਾ-ਰੋਅਂਦਨਿ ਖੇ ਖਿਲਾਇਨਿ ਥਾ ।  
 ਸਭ ਅੜ੍ਹ ਅਧਾਇਨਿ ਥਾ-ਕੋਈ ਖਾਲੀ ਨ ਵੇਂਦੋ ॥

੪-ਅਦਾਸ ਅਧਾਈਂਦਾ-ਦਮ ਦੇਰਿ ਨ ਲਾਹੀਂਦਾ ।  
 ਪ੍ਰਤਾਪ ਖੇ ਬਖ਼ਾਈਂਦਾ-ਤਫ਼ਹਿੰ ਜਨਮ ਸਫਲ ਥੀਂਦੋ ॥

~~~~~

ੴ 44

~~~~~

तर्जः:-परदेसी परदेसी जाना नहीं.....

थलुः:-सत्गुरु ओ सत्गुरु-स्वामी शांति प्रकाश,  
स्वामी शांति प्रकाश-आयुसि तो दरि, रखी दिल में आश।

तूं रहिमत जो आं दाता-ओ मुंहिंजा साईं,  
करे महिर मालिक-मुंहिंजी पूरी करि तूं आश ॥

१-दखार छिठी मूं तुंहिंजी-सत्गुरु आली आ।

तूं दीन दुनिया जो मालिकु-तूं ई वाली आ।

केई आश रखी दरि आया-आहिनि स्वाली आ।

स्वालिन जी भरिजां झोली-जेका खाली आ।

दे सुमती अहिड़ी दाता-ओ मुंहिंजा साईं।

बियो तोखां कीन घुरां मां-करि कुमति किनीअ खे नासु।

सत्गुरु ओ सत्गुरु.....

२-केई पांडु पसारे-तो दरि आया थई।

कनि मिंथ छिहाड़ी तोखे-पल्लव पाराया थई।

अड़ियनि जा भी दाता-अर्ज ओनाया थई।

निपुटनि खे देई पुटिड़ा-झूला झुलाया थई।

केई सिक सां तोखे पुकारिनि-ओ मुंहिंजा साईं।

करि आशूं सभ जूं पूरियूं-वजे नीगंर भी न निरासु।

सत्गुरु ओ सत्गुरु....

तर्जः:-असुर जो राम रीझाइ बंदा.....

थलुः:-मंगलमय मुंहिंजो सत्युरु आहे-मंगलमय दीदार आ।

मंगल द्रींहुं आ जन्मु गुरु जो-मंगल सां मुंहिंजो प्यार आ॥

१-स्वामी शांति प्रकाश सोभारो-मंगल करण लाइ आयो आ।

कष्ट विघ्न सभु दूर करे थो-कंदो लायो सजायो आ॥

२-मंगल द्रींहुं पंज रोट पचाए-गुरुआ दरि जो ईंदो आ।

मन जा मनोरथ पाए सोई-हरको खुश थी वेंदो आ॥

३-मंगल वारो मनठार प्यारो-सत्युरु देव भगवान आ।

बालकी रतना सीसु निवाए-महिमा जंहिंजी महान आ॥

तर्जः:-तू चीज़ बड़ी है मस्त-मस्त.....

थलुः:-साईं शांति प्रकाश जी मस्त-मस्त।

तेरा नाम बड़ा है मस्त-मस्त।

तेरे नाम में हो गया मस्त-मस्त।

नहीं मुझको कोई होश-होश।

मैंने लीनी तेरी ओट-ओट।

मैं हूं तेरा.....मैं हूं तेरा साईं भक्त-भक्त।

तेरी बंसी पे हो गया मस्त-मस्त॥

तेरे द्वार पे हूं मैं मस्त-मस्त॥

१-ये मन तेरी भक्ति में ढूबा-हर पल तेरा मैं नाम जपूंगा।

मैं तो हूं तेरा दास-दास-मुझको है तेरी आस-आस।

तू दिल का.....तूं दिल का है चित चोर-चोर,

सब आए हैं तेरी ओर-ओर.....

~~~~~ ४ ~~~~~  
२-द्वार तेरे पे साईं जो भी आया-तेरी माया को समझा न पाया ।

तू भरता उसकी झोली-झोली-मीठी है तेरी बोली-बोली ।
साईं तुझको...साईं तुझको याद किया जिसने,

मन उसका हो गया मस्त-मस्त...

३-दीन दुखी का साईं तू है दाता-झलक दिखादो मन है मेरा प्यासा ।

तू दुनिया भर में एक-एक-तेरे काम बड़े हैं नेक-नेक ।
महिमा तेरी सोनी...महिमा तेरी सोनी गाता रहे,

तेरी नाम में होकर मस्त-मस्त...

~~~ ५ ~~~ भजन-७९ ~~~~

तर्जः:-द्वाढो मिठो आ-द्वाढो मिठो आ.....

थलुः:-द्वाढो मिठो आ-द्वाढो मिठो आ,

स्वामी शांति प्रकाश जो नालो द्वाढो मिठो आ ।

द्वाढो प्यारो आ द्वाढो प्यारो आ,

स्वामी शांति प्रकाश जो नालो द्वाढो प्यारो आ ॥

१-गुरुअ जे दरि हली भागु था खुलनि-वाह वाह जो भागु था खुलनि ।

पूरब जनम जा पाप धोपजनि-वाह वाह पाप धोपजनि ।

कर्मनि जी रेखा टरी सिधी थी वजे-

चवनि वेद पुराण कोई मजे न मजे ।

भागु पंहिंजो ठाहे वढु कष्ट मिटाए वढु ।

वक्त तुंहिंजे लाइ आयो आ-आयो आ....

२-करि कुछ पुज सुख चाहीं जे-सुख चाहीं जे ।

पाप कंदें हिते दुख पाईंदें हुते-दुख पाईंदें हुते ।

गुरुअ जे शरण में ईंदें तूं हली-

साईं शांति प्रकाश कंदो तुंहिंजी सवली ।

प्रेम लगाए छिसु-नातो निभाए छिसु ।

साईंअ महिर जो मींहड़ो वसायो आ-वसायो आ....

३-ગुરુ ગરીબનિવાજ આહे કંદો સવલી-વાહ જી કંદો સવલી।  
 ચવે સાઈ સત્સંગ મેં આઉ તૂં હલી-વાહ વાહ આઉ તૂં હલી।  
 ગુરુઅ જો દરુ સદા ખુલિયલિ આહે-  
 ગુરુઅ જે દર ખે વરુ મિલિયલિ આહે।  
 સિરડો ઝુકાએ દિસુ સુખ ફલ પાએ દિસુ-  
 સંગતિ જો સાઈ અજુ આયો આ-આયો આ...

~~~~ ભજન-૮૦ ~~~

તર્જઃ:-હોઠોં સે છૂ લો તુમ....

થલુઃ:-મુંહિંજા સત્તુરુ શાંતિ પ્રકાશ-પંહિંજી ગોદ મેં જાડ દિજાંડિ।
 માં ત પકડિયો પલ્લવ તુંહિંજો-મુંહિંજી લાજ અચી રખિજાંડિ॥

૧-માં આહિયાં એબ ભરી-મુંહિંજા ડોહ ન તૂં દિસજાંડિ।
 જે ભુલિયલુ આહિયાં બાબા-સચી રાહ અચી દુસિજાંડિ।
 પંજ દૂત મુંહિંજે મન જા-અચી સત્તુરુ તૂં કદિજાંડિ॥

૨-મુંહિંજો કરમ-ધરમ દાતા-આહે સત્તુરુ તો હથ મેં।
 તૂં જેકી કરીં સત્તુરુ-કરે સધીં થો સેકણ્ડ મેં।
 બસિ બ્રી ન અથમિ આશા-ભવસાગર પાર કજાંડિ॥

૩-તૂં માત પિતા મુંહિંજો-માં બ્રારુ આહિયાં તુંહિંજો।
 રહે તાર તુંહિંજી તન મેં-જપિયાં નામુ સદા તુંહિંજો।
 મિલી મુહિબ રહાં તોસાં-તૂં મહિર કરે મિલજાંડિ॥

~~~~~ ले के ले ~~~

~~~ के भजन-८१ के ~~~

तर्जः:-तुझे सूरज कहूं या चंदा.....

थलुः-तोखे राम चवां रखवारो-तोखे कृष्ण चवां मां कारो।

आहे संतनि में सोभारो-साईं शांति प्रकाश प्यारो॥

१-तुंहिंजी सुहिणी सुहिणी सूरत-तुंहिंजी मोहिणी-मोहिणी मूरत।

जगु तारण जे लाड आयो-मुंहिंजो मोहन प्यारो-प्यारो।

माता जुगल ब्राईअ जो दुलारो-पिता आसूदाराम जो जियारो।

सारे जगु खां आहे नियारो-साईं शांति....

२-आहे दर्द भरी हीअ दुनिया-कोई संगी नाहे कंहिंजो।

करे कार्ज संगति जा साडँ-ऐं करेथो सभखे पंहिंजो।

चण्ड तारनि खां भी सुहिणो-आहे हरदम प्यारो-प्यारो।

सारे जगु जो आहे सहारो-साईं शांति....

३-आहे नील गगन जो तारो-आकाश मण्डल में सितारो।

आहे तारनि में हिकु तारो-साईं शांति प्रकाश सूंहारो।

धुव तरे ज्यां हीउ तारो-इहो हरदम न्यारो-न्यारो।

हरिदास जे अखिंजी जो तारो-साईं शांति...

~~~~ के भजन-८२ के ~~~

तर्जः:-सायो नारा-सायो नारा कल फिर आऊँगी सायो नारा...

थलुः-गुरु प्यारा सत्गुरु प्यारा-स्वामी शांति प्रकाश प्यारा।

हरि प्रेमियुनि खे दिल जे अंदर-आहे तुंहिंजी प्यास प्यारा॥

१-तुंहिंजे गुणनि जो गान करियूं-पल-पल तुंहिंजो ध्यान धरियूं।

याद आहीं सभिनी खे सदा-जोणी उल्हास नगर वारा॥

२-वचननि सां मन मोहे छद्मियो-धारियनि खे भी पंहिंजो कयो।

तुंहिंजो जसु मिली ग्रायूं था-संत सचा साईं सूंहारा॥

३-दर्द वंदन ते आणे दया-सेवा जा केई कार्य कया।  
 साधू ब्रह्मण संतनि लाइ-खोले छदिया तो भण्डारा॥

४-तोसां प्रीत अचे रहिजी-मुरलीअ जी आ इहा अज्ञी।  
 हरदम पंहिंजी ब्राङ्ग करे-ब्राङ्ग करियो ओ ब्राङ्गारा॥

~~~~~ भजन-८३ ~~~~

तर्जः:-चोरी-चोरी चुपके-चुपके अखियां मिलाई रे.....
 थलुः:-स्वामी शांति प्रकाश जा लख थोरा भायां मां,
 सेवक तिन जो हरदम सद्यायां मां।

१-देई प्यार मूँखे जिन पंहिंजो बणायो।
 समझ देई मूँखे वेही समझायो।
 चुमी चरण तिन जा भाग ही बणायां मां॥

२-भरे प्रेम पियालो जंहिं सभखे पियारियो।
 देई ब्रोधु आतम जो अंदरि दीयो ब्रारियो।
 भुलिजी भी तिनखे कीन भुलायां मां॥

३-अचे शल रहिजी मुंहिंजी आश ईहा आहे।
 दास तुंहिंजो साई प्यास ईहा आहे।
 सत्नाम साक्षी जपियां ऐं जपायां मां॥

~~~~~ भजन-८४ ~~~~

तर्जः:-पंखीड़ा ओ पंखीड़ा....  
 थलुः:-ओट आ तुंहिंजी मूँखे तुंहिंजो आधार आ।

१-तुंहिंजा प्रेमी तोखे अजु पुकारिनि पिया।  
 तुंहिंजे दर्शन लाइ वाढू निहारिनि पिया।  
 कदहिं अची दर्शन दींदें इन्तज्जार आ-स्वामी....

~~~~~ ॥ ५ ॥ ~~~  
२-पंहिंजे मेले मां मूँखे बि वसाइजांइ ।

कद्हिं दर्शन लाइ दिलड़ी न तरसाइजांइ ।

दर्शन सां तुंहिंजे थींदी मुंहिंजी दिल बहार आ-स्वामी....

३-भव सागर में तुंहिंजो सहारो खपे ।

हिन ब्रेड़ीअ खे साईं किनारो खपे ।

वीरभान तोखां सवाइ बेकार आ-स्वामी....

~~~~ ॥ भजन-८५ ॥ ~~~

तर्जः-पखीअड़ा ओ पखीअड़ा.....

थलुः-पखीअड़ा ओ पखीअड़ा-पखीअड़ा ओ पखीअड़ा ।

पखीअड़ा तूं वजु उद्धामी, मुंहिंजे साईंअ द्वे-

खणी वजु नियापो स्वामी शांति प्रकाश द्वे ॥

१-तोखे हीरनि ऐं मोतियुनि जो सुहिणो हार मां द्वींदसि ।

पंहिंजे सत्गुरु लाइ हिक ग्राल्ह चवंदसि ।

चरन चुमी अर्ज कजांइ सुन्दर श्याम खे-खणी वजु...

२-खणी नेण पई निहारियां कद्हिं ईंदें तूं पिरीं ।

इन्तज्जार में न वजनि मुंहिंजा प्राण निकरी ।

मिठड़ा छो थो तड़फाई अची दर्शन जल्द द्वे-खणी...

३-खणी न्यापो ईंदें नारायण तोखे इनाम द्वींदोसांइ ।

मिठो वात कराए शंकर तोखे दुआ कंदोसांइ ।

ईंदें सूमर द्वींहुं या आरतवार या छंछर वार ते-खणी...

ਤੜ੍ਹ:- ਦੂਲਹ ਦਰਿਆਹ ਸ਼ਾਹ ਮੁਹਿੰਜੀ.....

ਥਲੁ:- ਸਤਗੁਰ ਸ਼ਾਂਤਿ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਮੂੰਖੇ ਦਰਸਨ ਪੰਹਿੰਜੋ ਕਰਾਇਯਾਂਡ।

ਦਾਸ ਪੰਹਿੰਜੇ ਤੇ ਹਥਡੋ ਝੁਮਾਏ ਪੰਹਿੰਜੋ ਸਦਾਈ ਬਣਾਇਯਾਂਡ॥

੧-ਦਰਸਨ ਤੁਹਿੰਜੇ ਲਾਡ ਸਿਕਾਂ ਥੋ-ਘੜੀਅ-ਘੜੀਅ ਸਥ ਕੰਹਿੰਖਾਂ ਪੁਛਾਂ ਥੋ।

ਦਰਸਨ ਤੇ ਹਿਕ ਵਾਰ ਤੁਂ ਬਾਬਾ-ਮਨਡੋ ਮੁਹਿੰਜੋ ਠਰਿਯਾਂਡ॥

੨-ਜਨਮ-ਜਨਮ ਜੋ ਨਾਤੋ ਤੋਸਾਂ-ਆਉ ਅਚੀ ਮਿਲ ਸਤਗੁਰ ਮੂਸਾਂ।

ਦਰ ਪੰਹਿੰਜੇ ਜੋ ਸੇਵਕ ਬਣਾਏ-ਮਹਿਰ ਜੋ ਹਥਡੋ ਘੁਮਾਇਯਾਂਡ॥

੩-ਜੋ ਭੀ ਤੁਹਿੰਜੀ ਸ਼ਰਣ ਮੌਂ ਆਯੋ-ਭਾਗੁ ਫਿਟਲੁ ਤੋ ਤਿਨ ਜੋ ਬਣਾਯੋ।

ਮੂੰਤੇ ਪੰਹਿੰਜੀ ਕ੃ਪਾ ਧਾਰੇ-ਚਰਣਨਿ ਮੌਂ ਤ ਵਿਹਾਰਿਯਾਂਡ॥

ਤੜ੍ਹ:- ਪਰਦੇਸਿਧਿਆਂ ਸੇ ਨਾ ਅਖਿਧਾਂ ਮਿਲਾਨਾ.....

ਥਲੁ:- ਸ਼ਵਾਮੀ ਸ਼ਾਂਤਿ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਜੀ ਮਹਿਮਾ ਆ ਨਾਰੀ।

ਧਾਦ ਕਰੇ ਥੀ ਅਜੂਨੀ ਭੀ ਦੁਨਿਆ ਸਾਰੀ॥

੧-ਪ੍ਰੇਮ ਜੋ ਸਾਗਰ ਸਭ ਖੇ ਪ੍ਰੇਮ ਪਿਧਾਏ-

ਸਭਿਨੀ ਦਿਲਿਧੁਨਿ ਖੇ ਵਿਧੋ ਪੰਹਿੰਜੋ ਬਣਾਏ।

ਪ੍ਰੇਮ ਜੀ ਮਿਠੱਡੀ ਭੋਲੀ ਲਗੇ ਸਭ ਖੇ ਪਧਾਰੀ॥

੨-ਦੇਸ਼ ਵਿਦੇਸ਼ ਮੌਂ ਨਾਮ ਜਪਾਏ-

ਪੰਹਿੰਜੇ ਗੁਰੂਅ ਜੋ ਸ਼ਾਨ ਵਧਾਏ।

ਧਨਗੁਰੂ ਟੇੱਕਾਮ ਜੀ ਧੁਨੀ ਤਚਾਰੀ॥

੩-ਧਰਮਸ਼ਾਲਾ, ਨਾਰੀਸ਼ਾਲ ਬੁਢਾ ਆਸ਼ਰਮ ਖੋਲੇ-

ਦਵਾਖਾਨਾ ਖੋਲੇ, ਸੁਹਿਣੀ ਗੜਸ਼ਾਲਾ ਖੋਲੇ।

ਜੋਗੀਅ ਵਸਾਈ ਸੁਹਿਣੀ ਹੀਅ ਫੁਲਵਾਡੀ॥

੪-ਸਿਜੁ ਚਣਡੁ ਤਾਰਾ ਜੇਸੀਂ ਹਵਾ ਰਹੇ ਪਾਣੀ-

ਸਾਈਅ ਜੀ ਰਹਂਦੀ ਤੇਸੀਂ ਅਮਰ ਕਹਾਣੀ।

ਸੈਰੂ ਸਚੋ ਸੈਲਾਨੀ ਵਧੋ ਸੁਹਿਣੀ ਕਰੇ ਤੈਧਾਰੀ॥

५-ज्ञानी सचो गुणधाम सचो हो-

परम उदारी निष्काम सचो हो।

ब्रह्मानन्द संत सचो हो नित अवतारी ॥

~~~ ४८ ~~~

तर्जः:-है प्रीत जहां की रीति सदा.....

थलुः:-आहे संत महान स्वामी शांति प्रकाश-

मां तंहिंजा ई गुण ग्रायां थो।

गुण घणा हुआ मुंहिंजे सत्गुरु में-

मां हिकु-हिकु करे बुधायां थो-हो.....

१-जंहिंमें राम जहिंडी मर्यादा हुई-साईं सभ खे राह देखारे वियो।

करे दीननि दुखियनि जी सेवा-साईं प्रेम जो प्यालो प्यारे वियो।

अहिंडे पर उपकारी संत खे मां-अजु नित-नित शीशु झुकायां थो ॥

२-श्री कृष्ण वांगुरु रास रचाए-प्रेम जी बंसी वज्राए वियो।

गायुनि बछड़नि जी सार लही-गऊशाला जो निर्माण कयो।

अहिंडे ज्ञानी-ध्यानी संत खे मां-अजु नित-नित शीशु झुकायां थो ॥

३-साईं शंकर वांगुरु ध्यान धरे-ज्ञान जो दीप जगाए वियो।

साईं जीव ईश जो भेद हटाए-संसा भरम मिटाए वियो।

अहिंडे त्याही जोही संत खे मां-अजु नित-नित शीशु झुकायां थो ॥

४-हुई हनुमान ज्यां भक्ती जंहिंमें-सरस्वतीअ जी वाणी हुई।

सभिनी संतनि ऐं ग्रंथनि जी-सत्संग में भी समझाणी हुई।

ब्रह्मानन्द अहिंडे सत्गुरु खे-अजु नित-नित शीशु झुकायां थो ॥

~~~~~ ॥ भजन-८९ ॥ ~~~

तर्जः:-मुंहिंजो गुरु त पीरनि जो पीरु आ.....

थलुः-स्वामी शांति प्रकाश महान आ-असाँ प्रेमियुनि लाइ भगवान आ।  
हलो त हली दर्शन कर्यू-गुरुअ दर ते-गुरुअ दर ते...

१-जेको शांतिअ जो भण्डार आ, जंहिंजी महिमा अपरम्पार आ।

हलो त हली महिर घुरुं....

२-जेको प्रेम संदो सागर आ, सचपच नटवर नागर आ।

हलो त हली प्रेम पियूं....

३-साईं सभ जी आश पुज्ञाए, साईं दुखड़ा सभ जा मिटाए।

हलो त हली झोली झलियूं...

४-सचो ज्ञान संदो भण्डार आ, साईं कलियुग में अवतार आ।

हलो त हली दया घुरुं....

५-जंहिंजी निर्मल मिठड़ी वाणी, जंहिंमें वेदनि जी समझाणी।

हलो त हली भरम भजूं....

६-ब्रह्मानन्द माँ सीसु झुकायाँ, गुण कहिड़ा-कहिड़ा ग्रायाँ।

हलो त आसीस घुरुं.....

~~~~~ ॥ भजन-९० ॥ ~~~

तर्जः-जिंदगी इक सफर है सुहाना.....

थलुः-अची गद्दिजी खुशियूं मनायूं-स्वामी शांति प्रकाश साईं आयो।

जय-जय शांति प्रकाश बाबा-जय-जय शांति प्रकाश।

धन गुरु टेऊँराम-सभई चओ धन गुरु टेऊँराम॥

१-प्रेम जो सागर प्रेम भरे-सभिनि खे द्विए थो महिर करे।

अचो झोली अची के भरायो-स्वामी शांति प्रकाश....

~~~~~ लौ लै ~~~~  
२-संतनि में सोभारो आहे-सभिनी संतनि में न्यारो आहे।

अचो गद्बिजी शीश झुकायो-स्वामी शांति प्रकाश....

३-त्यगु सचो वैरागु मन में-भगिती (सेवा) कयाऊं बचपन में।

करे शेवा सचो भागु ठाहियो-स्वामी शांति प्रकाश....

४-निर्धन खे थो धन द्विए साईं-निपुटनि खे द्विए लाल साईं।

अचो दुखडा दर्द मिटायो-स्वामी शांति प्रकाश....

५-ज्ञान जो दीपक जगायो आ-अज्ञान अंधेरो मिटायो आ।

अचो भरम ऐं संसा मिटायो-स्वामी शांति प्रकाश....

६-ब्रह्मानन्द थो अर्जु करे-संगति ते सत्गुरु महिर करे।

थींदो पल्लव सभनि जो सजायो-स्वामी शांति प्रकाश....

~~~ भजन-११ ~~

तर्जः:-ज्योति से ज्योति जगाते चलो.....

थलुः:-साईं शांति प्रकाश जी शरण हलो-भागु तब्हांजो त थींदो भलो।

१-साईं शांति प्रकाश जी सुहिणी सूरत-सिज चण्ड खे शर्माए।

दर्शन सां दुख दूर थियनि था-वचन मन खे लुभाए।

सचे गुरुअ जे दर ते हलो-भागु....

२-साधू योगी ब्रह्माज्ञानी-तुंहिंजो जसु था ग्राइनि।

हर हृदे में प्यार भरियो तो-अमृत रस वरसाइनि।

आरती गुरुअ जी उतारींदा हलो-भागु....

३-धन-धन दींहुं सभागो आयो-गुरुअ जो दर्शन पायो।

प्रेम प्रकाशी सत्य धर्म जो-घर-घर संदेशो पहुंचायो।

सत्नाम साक्षी जपाईदा हलो-भागु....

४-जगुति बिखारी तुंहिंजे दर ते-जगु खे पालण हार।

राणी दुखी थी तोखे पुकारे-सत्गुरु सुणजो पुकार।

मन जो माण मिटाईदा हलो-भागु....

~~~~~~~~~~  
~~~ भजन-१२ ~~~

तर्जः:-मुंहिंजी भेनरु भली फार पई आ...

थलुः:-भेनरु महिला मंदरु त सींगारियो-साईं शांति प्रकाश पधारियो।

१-आयो भगवान कयो सन्मान-सत्गुरु सचे जा आहिनि अहिसान।

जंहिं नाम जो प्यालो पियारियो-साईं...

२-वर्यू वाधायूं वजियूं शहिनायूं-गुरुन अचण जूं खुशियूं मनायूं।

जंहिं मनडो सभ जो ठारियो-साईं...

३-आसण लग्नाए सत्गुरु विहारियां-फूलनि जी माल्हा मां तंहिंखे पहिरायां।

अचो आरती गुरुन जी उतारियूं-साईं....

४-हुयूं आसूं से पुजियूं प्यासूं-मन अंदर जे बासियूं बासियूं।

राणी सत्गुरु आ कारज संवारियो-साईं...

~~~~~ भजन-१३ ~~~~~

तर्जः:-लेके पहला पहला प्यार....

थलुः:-जेको शरण अचे हिकवार-काटे चौरासीअ जो भारु।

सत्गुरु शांति प्रकाश-आहे मोहन मनठार॥

१-शांति प्रकाश जहिडो सज्जणु न कोई-शरण अचे संसार सज्जोई।

दे थो सभ खे ब्रह्मज्ञान-महिमा जंहिंजी आहे महान॥

२-शांति प्रकाश जी मूरत धारियो-शरण पयनि जा कारज संवारियो।

करे नज्जर सां निहाल-करे सभ खे मालामाल॥

३-वचननि जी हित गंगा वहे थी-रोज अचण सां ज्ञाण पवे थी।

रखिजो राणीअ मथां राज-दिनो सुखनि जो साज॥

~~~~~ ६ भजन ~~~

तर्जः:-मुंहिंजी भेनरु भली फार पड़ आ.....

थलुः:-चक शहर में आनन्द छायो-माता जुगल खे शांति प्रकाश जायो।

१-सत्गुरु ज्ञमण सां वर्यू वाधायूं-

खुश थिया नंदा वदा मर्द मायूं।

थ्री वियो सभ जो लाजो सजायो-माता.....

२-सावण महिनो पूरणमासी-

आयो शांति प्रकाश घट-घट वासी।

अची आरती गुरुन जी उतार्यो-माता....

३-चक शहर में थिया शादनामा-

पिता आसूदे घर आया नानी-नाना।

पोड़ थाल पताशा विरहायो-माता....

४-जन्मदिन सत्गुरु जो मल्हायो-

प्रेमी गद्विजी खुशियूं मनायो।

कंदा सभ जो शल भागु सवायो-माता....

५-ब्रारु रतना करे अरदास-

हे मुंहिंजा सत्गुरु शांति प्रकाश।

हर मेले ते भेरो करायो-माता....

~~~~~ ७ भजन ~~~

तर्जः:-अजु भेनरु भली फार पड़ आ.....

थलुः:-आया आया खुशियुनि जा ओ डींहड़ा-

वसिया महिर मुहब्बत जा मींहड़ा॥

१-आयो सत्गुरु भगुवान कयां सन्मान-

संगति गद्विजी कयो प्रणाम।

आया जगु तारण लाइ जोगीअड़ा-वसिया...

२-शांति प्रकाश पधारियो रस्ता सींगारियो-

हिरदे जे हिंदोरे में साईं विहारियो ।

हाणे लालण पाता ओ लीअड़ा-वसिया....

३-गांधीनगर में थिया शादमाना-

प्रेमी वजाइनि धुकड़ दमामा ।

आया अमरापुर जा सुंहारा-वसिया.....

४-पूरियूं पकोड़ा ऐं डहीवड़ा-

संत विरहायो लट्ठं पेड़ा ।

आहिनि राणीअ जा त पिरींअड़ा-वसिया...

~~~ ५ भजन-१६ ~~

तर्जः:-जिस दिल में बसा था प्यार तेरा...

थलुः:-मूंते सत्युरु कयो उपकार जेको-

सचे नाम जो मूंखे दान दिनो ॥

१-मूंसां सत्युरु कयडी भलाई आ-मुंहिंजी कीन दिठी का दिंगाई आ ।

जंहिं बिगड़ी सभ जी बणाई आ-आहे दीन दयालू दातार वढो ॥

२-साईं शांति प्रकाश जहिडी केरु करे-पंहिंजी नूरी सभ ते नज़र करे ।

जेको बार-बुढे खे पंहिंजो करे-पर गुरु चरननि में रहे भिनो ॥

३-मुंहिंजो गुरु गरीबनिवाज आहे-सदा रखंदो लाज आहे ।

कंदो कीन कंहिंजो मोहताज आहे-बार रतना खूब आजमाए दिठो ॥

~~~ ६ भजन-१७ ~~

तर्जः:-मुंहिंजो दासूं दवा तुंहिंजो दीदारु आ....

थलुः:-मूंखे सत्युरु सचा तुंहिंजो आधार आ ।

हिति जीअण कलजुग में बेकार आ ॥

१-साईं शांति प्रकाश पूरो सत्युरु मिल्यो ।

मुंहिंजे पूरब जनम जो को भागु खुल्यो ।

हाणे मिल्यो गुरुन जो मिठडो प्यार आ ॥

२-द्विसी दुख त दुनिया जा हींअडो द्रे।

बिना केरु तुंहिंजे साईं नज़र करे।

हिक सत्गुरु सचो संगी करतार आ॥

३-जेसीं जग में जीआं गुरु दर न छद्धियां।

सदा गुरु चरनी पंहिंजो मनडोअद्धियां।

बसि हरदम इहा मुंहिंजी अरदास आ॥

४-द्वियो दर्शन दाता आहे मनडो उदास।

कयो जाणी उथी जल्दी कारज रास।

बार रतना दर्शन जी तलबदार आ॥

~~~॥ भजन-१८ ॥~~~

तर्जः:-रामचंद्र कह गए सिया से.....

थलुः-उथंदे विहंदे खाईंदे पीअंदे-मनडा गुरूअ जो सुमरन करि।

गुरुन जूं तोते लख भलायूं-गुरूअ जे दर ते भेरो करि॥

१-स्वामी शांति प्रकाश प्यारो-कृष्ण जो अवतार अर्थई।

तंहिं कृष्ण जी कृपा पाए-मानुष चोलो सफलो करि॥

२-संसारी सुख तो खूब द्विठई-बसि हाणे भग्नवत भगिती करि।

अमृत वेले जाणी मनडा-दाता खां तूं सुमती घुर॥

३-दुनिया दुखनि जी खाणी द्विसी-बि अजां न मनडो मोडीं थो।

सचे साईंअ जे चरणनि में रतना-पंहिंजो जीअडो जोडी करि॥

~~~॥ भजन-१९ ॥~~~

तर्जः:-बहुत प्यार करते हैं....

थलुः-शांति प्रकाश स्वामी करे वियो करम।

दयावान दानी हो-दिल जो नरम॥

१-स्वामी टेऊँराम सां हुन पको पेचु पातो।

गुरूअ रूप में हो सज्जण हिन सुआतो।

कढी पंहिंजे मन मां भोलो भरम॥

~~~~~  
२-स्वामी सर्वानन्द सचपच शंकर जो रूप हो ।
शांति प्रकाश स्वामी शांति स्वरूप हो ।
गोहर, गंभीर ज्ञानी कथाई को न गमु ॥

३-स्वामी देव प्रकाश सागियो नूरानी नूर थी ।
सजे संसार में ही ज़ाहिरां ज़हूर थी ।
बरकत भरियल थी हिन जो हिक हिक कदमु ॥

४-प्रेम प्रकाश मंदर में आई संगति हीअ समूरी ।
कंदो परम योगी आश सभिनी जी पूरी ।
बणी रहमान मोहन ते कंदो शल रहम ॥

~~~~~  
~~~~~  
भजन-१००

तर्जः:-परदेसी-परदेसी जाना नहीं...

थलुः:-रहिम मूंते रहिम मूंते रहिम कयो-२, रहिम जो घर आं...२
आ गुरुदेव प्यारा-संगति जा सहारा ।
संगति जा सहारा-साईं चक शहर वारा ॥

१-सावण महिनो पूरणमासीआई आ-२
माता जुगल जी झोल थीयड़ी साई आ-२
पिता आसूदे सब खे ढिनी वाधाई आ-२
प्रेमियुनि जी बि साईअ आश पुजाई आ-२, आ गुरुदेव...
२-कलियुग में अवतार बणिजी आयो आ आयो आ ।

संतनि में सिरमोर बणिजी आयो आ आयो आ ।
गायुनि जो गोपाल बणिजी आयो आ आयो आ ।
गोपियुनि जो घनश्याम बणिजी आयो आ आयो आ-आ गुरुदेव...
३-कल्याण जे पंजे नंबर में स्थान कयो स्थान कयो ।
प्रेमियुनि जे पूरब जनम जो भाग खुलियो भागु खुलियो ।
साईं शांति प्रकाश सत्गुरु मिली वियो-मिली वियो ।
दीननि जो दातार राणी मिली वियो-मिली वियो-आ गुरुदेव....

~~~~~ ६५ ~~~ भजन-१०१ ~~~

तर्जः:-सद्गुरु टेऊँराम तेरी मैंने देखी महान शक्ति.....

थलुः:-सद्गुरु शांति प्रकाश तुझको-भूल न पाएगा ये जमाना ।

१-माता पिता जियों सभको सम्भाला-दीना प्यार अपारा ।

सबके हित का कारज कीना-मेटा तांका दूख महाना ॥

२-लोक सेवा का पाठ पढ़ाया-तन पर दूख सहारा ।

सबके मन को प्रसन्न कीना-सबमें ईश्वर को तुम जाना ॥

३-वेद शास्त्र इतिहास पुराना-पाके ज्ञान भण्डारा ।

तांकी सबको शिक्षा दीनी-कीया ना कबहूं अभिमाना ॥

४-अजब अजायब निष्ठा तेरी-सबमें ब्रह्म पछाना ।

हंसते हंसते बोध कराया-ऐसा तेरा ज्ञान विज्ञाना ॥

५-कर्म उपासन ज्ञान भण्डारा-पूरण सत्तुरु मेरा ।

जो जिसका सत्पात्र होया-दीना उसको सोई दाना ॥

६-सरल नम्रता शांति स्वरूपा-सम दम षट् गुणधारी ।

राजू तिनके क्या गुन गाऊँ-सत्तुरु पूरण गुणनि निधाना ॥

~~~~~ ६६ ~~~ भजन-१०२ ~~~

तर्जः:-रेशमी सलवार कुर्ता जाली का....

थलुः:-स्वामी शांति प्रकाश कृष्ण मूरारी हो ।

कर्म उपासना ज्ञान जो भण्डारी हो ॥

१-सत्संग जी रास रचाई-ऐं प्रेम जी मुरली वज्ञाई ।

मिड़ी आया मड़द ऐं माई-तिन तन जी सुधि विसराई ।

अजब लीलाधारी हो.....

२-गीता जो ज्ञान बुधायो-निज करम धरम में लगायो ।

भरमनि जो भूत भजायो-आतम जो बोध करायो ।

ब्रह्म विचारी हो...

~~~~~ ६ ~~~~~

३-गायुनि जो हो रखपालू-हुयो गरीबनि जो कृपालू।  
हुयो सत्तुरु दीन दयालू-ऐं प्रेमिनि जो प्रतिपालू।  
पर उपकारी हो...।

४-राजू छा महिमा ग्रायां-मां सेवक तिन जो आहियां।  
चरननि में सीसु झुकायां-ऐं सदा ईंथो भायां।  
गुरु अवतारी हो...।

~~~ ७ भजन-१०३ ~~

तर्जः:-संसार है इक नदिया.....
थलुः-गुरुदेव मेरे प्यारे-मुझको अपना लीजे।
स्वामी शांति प्रकाश महाराज-चरणों में जगह दीजे॥
१-तेरी पावन चरणारज-मस्तक को लगाऊँ मैं।
तन मन से करूँ सेवा-भवपार हो जाऊँ मैं।
मन मोड़ दो विषयों से-तेरे नाम में मन भीजे॥

२-दुनिया के द्वदों में-कहां सुरती न खो जाए।
बस इतनी कृपा करना-तेरे नाम से जुड़ जाए।
रहूँ शरण सदा तेरी-दुख जन्म मरण छीजे॥

~~~ ८ भजन-१०४ ~~

तर्जः:-ऐ मेरे दिल-ए नादां ...  
थलुः-सुनो अर्ज मेरा गुरुवर-तेरा पावन प्यार मिले।  
स्वामी शांति प्रकाश महाराज-तेरा आधार मिले।

१-मैंने तो सुना जब से-तुम प्रेम के सागर हो।  
जो शरण आए तेरी-भर देते गागर हो।  
मेरा जीवन है खाली-मुझे ज्ञान अपार मिले॥

२-सब छोड़के दुनिया को-मैं शरण पड़ा तेरी।  
करदो कृपा मुझ पर-बन जाऊँ तव चेरी।  
हर क्षण मुझको तेरा-पावन दीदार मिले॥

તર્જા:- જિયા બેકરાર હૈ.....

થલુઃ- જ્ઞાની ગુણવાન આ- દાતા દ્યાવાન આ।

સ્વામી શાંતિ પ્રકાશ મુંહિંજો- સંત સચો મહાન આ॥

૧- સત્સંગ એં સેવા સાં જંહિંજો- પૂરો પ્રેમ- પ્યાર આ।

હરદમ હરહંધિ મૌજ મચાએ- કંદો બાગ બહાર આ॥

૨- મિઠડી જંહિંજી બ્રાણી આહે- અમૃત રસ બરસાએ થો।

તાપ કલેશી દોખી દર્દી- સભ જો દર્દ હટાએ થો॥

૩- દેશ વિદેશ જો સૈરુ કરે સાઈ- સભ ખે સુખ પહુંચાએ થો।

પ્રેમ સંદો પ્રચાર કરે એં- પ્યાલો પ્રેમ પિલાએ થો॥

૪- કર્મયોગી આ સત્યારુ મુંહિંજો- શુભ કર્મનિ મગ લાએ થો।

ભેદ ભરમ એં ભ્રાંતિ તોડે- જ્ઞાન જો દીપ જલાએ થો॥

૫- શરણાગતં જી સત્યારુ હરદમ- રહંદો સાર સમ્ભાર આ।

જ્ઞાન દ્રેર્દ અજ્ઞાન મિટાએ- ભવ ખાં કંદો પાર આ॥

તર્જા:- માં સ્વાલી તો દર આહિયાં.....

થલુઃ- સ્વાલી થી આયો આહિયાં-

ઓ સત્યારુ શાંતિ પ્રકાશ- હીઉ અર્જુ અઘાયો મુંહિંજો।

૧- હિક ભગુતિ દ્વિયો ભાવ વારી- જા પ્રભૂઅ ખે આ પ્યારી।

જેકા પાર કરે ભવ ભારી- માં ભગુતિ ઉહો થો ચાહિયાં॥

૨- બ્રિયોં પ્રેમ દ્વિયો દિલ વારો- રાજી કર્યા પ્રભૂ પ્યારો।

વબી જગુ ખાં કયાં કિનારો- માં પ્રેમ ઉહો થો ચાહિયાં॥

૩- ટિયોં દ્વિયો વિશ્વાસ જી મૂડી- જીઅં પ્રભૂ મિલે જરૂરી।

બ્રી દુનિયા ભાયાં કૂડી- વિશ્વાસ ઉહો થો ચાહિયાં॥

૪- ઇહો અર્જુ અઘાયો મુંહિંજો- માં બણિયો રહાં શલ તુંહિંજો।

નિતુ નામ જપાયો પંહિંજો- બસિ પ્યાર ઇહો થો ચાહિયાં॥

तर्जः:- ए मेरे दिल कहीं दूर चल.....

थलुः:- स्वामी शांति प्रकाश सुजान हो- जेको ज्ञानी वदो गुणवान हो ॥

१- हीउ संत संचो त सुधीरु हो- नित निहठो निमाणो गंभीरु हो ।  
एँ वीरु वदो विद्वान हो ॥

२- सचो सत्संग जो सरदार हो- कंदो ज्ञान संदी गुफ्तार हो ।

एँ कामिल वदो कलावान हो ॥

३- जंहिंजो मिठिडो मधुर आवाज हो- जंहिंजी ब्राणीअ अंदरि को राज हो ।  
एँ ब्रोधी वदो बलवान हो ॥

४- कयो त्याहु पंहिंजो आराम हो- बणियो संत सचो निष्काम हो ।

एँ दाता वदो दयावान हो ॥

५- ठाहियो आश्रम सुठो आलीशान हो- अची झुकियो सज्जो त जहान हो ।  
एँ आकिलि वदो अकलवान हो ॥

६- केई गुणनि संदो भण्डार हो- पंहिंजे प्रेमिनि जो आधार हो ।

एँ नेही वदो निगहबान हो ॥

तर्जः:- ओ-४ मुझे किसी से प्यार हो गया.....

थलुः:- ओ ओ ओ स्वामी शांति प्रकाश महान हो ।

१- आयो देही धरे दर्वेश हो- दिनो सत्मार्ग संदेश हो ।

करे महिर मया, दीननि ते दया- सभु कारिज कया ॥

२- जेको दानी वदो दातार हो- लहंदो सभ जी सार संभार हो ।

मिठो ब्रोले करे, दिल खोले करे- वियो झोल भरे ॥

३- खोली नारिनि लाइ नारी शाला- एँ यात्रिनि लाइ धर्मशाला ।

शुभ कर्म कया, दूर ग़म कया- सभ आनन्द थिया ॥

५- खोलियो दोखिनि लाए दवाखानो- दिनो पसुनि परखिनि खे हो दाणो ।

सभमें मोहन दिठो, दिनो प्यार मिठो- हुयो संत सुठो ॥

~~~~~ शुभे शुभे ~~~

~~~ शुभे भजन-१०९ शुभे ~~~

तर्जः:-अर्जु अघाइ अर्जु अघाइ...

थलुः:-दे दीदारु, दे दीदार-दे दीदार स्वामी शांति प्रकाश।

१-मधुर अव्हांजी मूरत आहे-दर्शन सां सभु दुखडा लाहे।

करे बहार-३....स्वामी शांति प्रकाश॥

२-नाम अव्हांजो निर्मल न्यारो-परम तेज सां भरियलि सारो।

सर्व आधार-३....स्वामी शांति प्रकाश॥

३-लीला आहे अव्हांजी निराली-दिसी दिसी दिल थिये सुखाली।

आहे सुखकार-३...स्वामी शांति प्रकाश॥

४-आतम घर जा आहियो वासी-दिलडी दर्शन लाइ आ प्यासी।

अचु हिकवार-३....स्वामी शांति प्रकाश॥

५-दास दिलीप जो अर्जु ओनायो-दरसु डेई दिल मुंहिंजी ठारियो।

हीं जा हार-३ स्वामी शांति प्रकाश॥

~~~~~ शुभे भजन-११० शुभे ~~~

तर्जः:-दिल को मिलाओ तुम दीन दयाल से....

थलुः:-संत सचारो स्वामी शांति प्रकाश हो।

१-सुहिणी हो सूरत वारो-मुहिणी हो मूरत वारो।

दया दातारो स्वामी-शांति प्रकाश हो॥

२-मिठडी हुई ब्राणी जंहिंजी-सुहिणी समझाणी जंहिंजी।

ज्ञानी गुलज्जारो स्वामी-शांति प्रकाश हो॥

३-शंकर ज्यां ध्यानी दाता-राम ज्यां ज्ञानी ज्ञाता।

कृष्ण अवतारो स्वामी-शांति प्रकाश हो॥

४-दुनिया खां करे किनारो-पातो हो प्रभू प्यारो।

भक्तिअ भण्डारो स्वामी-शांति प्रकाश हो॥

५-कृपा जो हुयो द्वारो-सभिनी जो कयो उद्धारो।

दिलीप आधारो स्वामी-शांति प्रकाश हो॥

~~~ ६ भजन-१११ ~~~

तर्जः:-होठों से छू लो तुम.....

थलुः-स्वामी शांति प्रकाश महाराज-शरणागत मैं तेरी ।

करदो कृपा गुरुवर-अरदास येही मेरी ॥

१-कई जन्मों से भटक रहा-नाना योनी अंदर ।

भोगे बहु दुख भारे-खाये चौरासी चक्कर ।

काटो फंद मेरा यह-मिट जाए जम फेरी ॥

२-जीवन यह मेरा रहा-विषयों के विष से भरा ।

आशा की पाशा में-मैं निश्चिन लटक रहा ।

करो मुक्त मुझे इन से-हो जाऊँ तब चेरी ॥

३-किये पाप घने मैंने-पतितों में हूँ नामी ।

तुम पतित पावन गुरुवर-सत्युरु हो सुखधामी ।

करो पार मुझे भव से-ना नाथ करो देरी ॥

~~~ ६ भजन-११२ ~~~

तर्जः:-तुम दिल की तमन्ना हो.....

थलुः-सारी दुनिया के स्वामी हो-तुम अन्तर्यामी हो ।

शांति प्रकाश जी-तुम कृष्ण मुरारी हो ॥

१-छोड़के मैं सारा जहाँ-दर पे तेरे आया हूँ ।

सत्युरु मेरे विनती सुनो-चरणों में तेरे आया हूँ ।

बिठा ले अपनी शरण में-कि दास तुम्हारा हूँ-शांति प्रकाश...

२-मन में लगी है लगन तेरी-दर्शन चाहूँ शाम सबेरे ।

छोड़ूँगा ना दर को तेरे-आस पुजा दो मन की मेरे ।

सुना दो अपनी बंसी को-मेरे दिल की तमन्ना है-शांति प्रकाश..

३-उल्लासनगर अमरापुर धाम-शांति प्रकाश जी संत महान ।

दीन दुखी को देते दान-करते वो सबका कल्यान ।

सोनी दर तेरे आता रहे-तेरी महिमा गाता रहे -शांति प्रकाश....

~~~~~ ६७ ~~~  
~~~ ४ भजन-११३ ५ ~~~

तर्जः:-महेंदी लगाके रखना, डोली सजाके सखना...
थलुः:-झोली फैलाए रखना-मन में बसाए रखना।

इक दिन तो आके साईं-पूरा करेंगे सपना -झोली...
१-आया हूं तेरे द्वारे-मन की मुरादें पाने-

भटका हुआ है ये मन-किस्मत को तू जगादे।
मैं दास हूं इक तेरा-जग के हो तुम विधाता-
चरणों में आया तेरे-बिगड़ी मेरी बनादे।

मुझको गले लगा ले-चरणों में तू बिठा ले-
साईं शांति प्रकाश स्वामी-कृपा बनाए रखना-झोली...

२-दीनों के तुम हो दाता-जिसने है तुमसे मांगा-
करते हो आस पूरी-खाली नहीं वो जाता।

मुझको भी दे सहारा-मेरे घर भी कर उजाला-
सपने सजाए बैठा-कर दे तूं आके पूरा।
सोनी को आके साईं-बंशी ज़रा सुनादे-
साईं शांति प्रकाश स्वामी-पूरा करेंगे सपना-झोली...

~~~ ५ भजन-११४ ५ ~~~

तर्जः:-लोक गीत.....

थलुः:-शांति प्रकाश स्वामी दर तेरे आए-दर्शन दो इक बार।

नैनों में करुणा का सागर-मन है बड़ा विशाल ॥

१- मांगा जो तेरे द्वार से-तूने दिया है प्यार से।

तेरी शरण में आ गए-लेना क्या संसार से।

प्रेम से बोलो, सत्नाम साक्षी।

रिल मिल बोलो, सत्नाम साक्षी।

ज़ोर से बालो, सत्नाम साक्षी।

सारे बोलो, सत्नाम साक्षी।

जय शांति प्रकाश साईं तेरी सदा ही जय।

मेरे सत्नुरु बाबा, तेरी सदा ही जय ॥

~~~~~ हौं लि हौं ~~~~  
२- मन को है तेरे नाम का-मन्दिर मैंने बना लिया।

तेरे चरण की धूल का-माथे तिलक लगा लिया।
काज संवारे, शांति प्रकाश।

कष्ट निवारे, शांति प्रकाश।
पार उतारे, शांति प्रकाश।

जय कल्याण वाले साईं तेरी सदा ही जय।
उल्हास नगर वाले साईं, तेरी सदा ही जय॥

३- दीपक है तेरे द्वार के-हम फूल तेरे हार के।

सेवा का सुख पा लिया-जीवन अपना वार के।

मन से बोलो, साक्षी शिवोऽहम्।

ऊँचा बोलो, साक्षी शिवोऽहम्।

मैं नहीं सुनिया, साक्षी शिवोऽहम्।

गज के बोलो, साक्षी शिवोऽहम्।

जयपुर वाले साईं तेरी सदा ही जय।

अमरापुर वाले साईं, तेरी सदा ही जय॥

~~~~~ लि भजन-११५ लि ~~~~

तर्जः-सत्गुरु दीन दयाल छण्डो हण शांति जो.....

थलुः-जादे वजां थो दिसां मां सत्गुरु शांति प्रकाश।

शांति प्रकाश साईं शांति प्रकाश।

घोरियां जिन्द ऐं जान-सत्गुरु शांति प्रकाश॥

१-चवे थो भोलेनाथ भण्डारी-काथे आहे सत्गुरु कृष्ण मुरारी।

सींगारियो आ कैलाश-अचे स्वामी शांति प्रकाश॥

२-चवे थो विष्णू राहूं निहारियां-सत्गुरु लाइ थोअखड़ियूं विछायां।

सींगारियो आ शेषनाग-अचे स्वामी शांति प्रकाश॥

३-सत्गुरु उन जे दिल में वसे थो-सिक श्रद्धा जेको प्रेम रखे थो।

ब्रह्मानन्द दियो दीदार-सत्गुरु शांति प्रकाश॥

तर्जः-भगवनि वारा से थई जग में.....

थलुः-सत्गुरु शांति प्रकाश जी महिमा, सब खां न्यारी न्यारी आ।

१-नण्डपण खां ई शेवा कयाऊँ-तन मन जो अभिमान छद्दे।

जोगु कमाए पाण पचाए-सुहिणी कई जंहिं त्यारी आ॥

२-संत सचो दर्वेश आ दाता-दिल जो दिलबर दानी आ।

दया धीरज ऐं समता सां गद्द-रहिणी सचु जस वारी आ॥

३-शांतीअ जो भण्डार सचो साई-निहठौ निमाणो न्याज्जी आ।

प्रेम जो प्यालो पियारे सभिनि खे-रहिबरु राह रुहानी आ॥

४-सत्गुरु जो संदेश पहुंचायो-ज्ञान संदी गजकार करे।

अन्तर्मुख थी ज्ञान ध्यान में-वृत्ति जगुत खां न्यारी आ॥

५-प्यार द्रेई कयो पंहिंजो सब खे-सब कंहिंजो सन्मान कयो।

त्यागु जी मूरत न्याज ऐं निवड़त-कृष्ण जां अवतारी आ॥

६-भजन भोजन जो हलायो भण्डारो-संत सचो उपकारी आ।

अहिडे सुहिणे संत सचे तां-ब्रह्मानन्द ब्रलिहारी आ॥

तर्जः-ईचक दाना मीचक दाना.....

थलुः-दाता दिलबर दानी-सत्गुरु शांति प्रकाश त आहे-महिर वसाए।

प्यार द्रेई सभिनी प्रेमिनि खे-पंहिंजो छद्दियो बणाए-महिर वसाए॥

१-सिक सां जंहिं बी याद कयो आ-बेडो तंहिंजो पार कयो आ।

दुखड़ा मिटाए आशूं पुजाए-पल में पार लगाए-महिर वसाए॥

२-महिमा महान् आ गुणी गुणवान आ-पर उपकारी सचो वीर विद्वान आ।

प्रेम जी मिठड़ी मुरली वज्ञाए-सत्संग मौज मचाए-महिर वसाए॥

३-त्यागु तपस्या सादगी जंहिंमें-सुहिणी निवड़त न्याज हो जंहिंमें।

मिठड़ी बोली ज्ञान जी गोली-हदरम वियो हलाए-महिर वसाए॥

४-सूरत जंहिंजी आहे सुबहानी-सिज चण्ड तारनि खां बी लासानी।

जेको ध्याए शांति पाए-ब्रह्मानन्द सुणाए-महिर वसाए॥

तर्जः - हमको हमी से चुरा लो .....

थलुः - सत्युरु स्वामी शांति प्रकाश तूं - संतनि जो आहीं सिरताज तूं।

मुरादूं पूरियूं करीं तूं सभ जूं - पुजाई आशूं साईं तूं सभ जूं।

आहियां निर्धन मां साईं धनवान तूं॥

१ - मर्यादा तो में - राम जहिडी द्विठी -

लीला तो में मां श्याम जहिडी द्विठी।

कयो सभ सां सदा तो प्यारु - सच्ची शेवा करे उपकार।

वधायो शान तो गुरु जो - जपायो नाम तो गुरु जो।

आहियां मूर्ख मां साईं गुणवान तूं॥

२ - ताकत मूं में का नाहे - महिमा कहिडी मां ग्रायां।

महिर कजो बाबा मूंते नाम जपियां ऐं जपायां।

गुरु भक्ति ज्ञान तोखां - सिखां गुणगान मां तोखां।

कयां अर्पन तन मन धन - सफल मुंहिंजो थिए जीवन।

आहियां निर्बल मां साईं ब्रलवान तूं॥

३ - बुढा आश्रम नारी शाला - दवाखाना खोले करे।

गऊशाला गायुनि लाइ - सभिनी ते महिर करे।

आहीं धनश्याम गायुनि जो - सचो रखपाल प्रेमिनि जो।

बुधीं थो दर्द सभ जा तूं - लाहीं थो मर्ज सभ जा तूं।

आहीं शाहन जो शाह बादशाह तूं॥

४ - ब्रह्मानन्द सत्युरु - महिर कयो सभ ते।

प्रेमी अचनि जेके - पार कजो सभ खे।

जपायो साखी ऐं सत्नाम - सचो आ धनगुरु टेऊऱाम।

सबक सच जो सेखार्यो तो - प्रेम पियालो पियारियो तो।

सचो शांतीअ जो आहीं भण्डार तूं॥

तर्जः:-तुम दिल की धड़कन में.....

थलुः-सत्तुरु स्वामी शांति प्रकाश-महिर कजो-२

महिर कजो, ब्राह्म कजो, रहिमु कजो, दया कजो ॥

१-निर्धन जो धन आहीं तूं-बेवाहनि जो वसीलो तूं।

दीननि जो दातारो तूं-निर्बल जो ब्रलु आहीं तूं।

करूणा सागर करूणा करे-बार पंहिंजे ते ब्राह्म कजो-ब्राह्म कजो....

२-दाता तुंहिंजे दर ते अची-सिक सां सीसु झुकायां थो।

प्रेम सां तुंहिंजे चाऊँठि ते-नेण खणी त निहारियां थो।

पल्लव मुंहिंजा पास कजो-कम सब मुंहिंजा रास कजो-रास कजो...

३-ज्ञानी गुणी गमटार आहीं-ब्रह्मानन्द मनठार आहीं।

भक्तिअ जो भण्डार आहीं-शांतिअ जो अवतार आहीं।

द्रोह गुनाह सभ माफ कजो-ऐबनि मुंहिंजनि खे ढकिजो-महिर कजो....

तर्जः-आ लौटके आजा मेरे मीत.....

थलुः-स्वामी शांति प्रकाश प्यारा-तोखे अजु याद करे जगु थो।

खणी नेणनि में नीरु अपार-तोखे अजु याद करे जगु थो ॥

१-न्याज ऐं निवड़त मिठडी आ बोली-ज्ञान जी सब खेडे लोली।

दर ते हजारें स्वाली अचनि था-भरे वजनि था झोली।

आहीं महिर कंदड मनठारु-तोखे अजु याद करे जगु थो ॥

२-पर उपकार त्यागी वैरागी-ज्ञान गुणनि जी खाणी।

जोगु कमाए पाण पचाए-दिल जो सचो थियो दानी।

सच्ची भक्तिअ जो भण्डार-तोखे अजु याद करे जगु थो ॥

~~~~~

3-प्रेम जी मिठड़ी मुरली वज्ञाए-सब जी दिल खे चोराए।
मस्त बणाए नाम जपाए-सभनी खे पंहिंजो बणाए।
तुंहिंजो याद करे उपकार-तोखे अजु याद करे जगु थो॥

4-सिज चण्ड तारा रोअनि था सारा-बारिशि पई रात सारी।
रोअनि पयूं गायूं मर्द ऐं मायूं-धरती रोए पई सारी।
ब्रह्मानन्द वजां मां ब्रलिहार-तोखे अजु याद करे जगु थो॥

~~~~~ भजन-१२१ ~~~

तर्जः:-जहां डाल -डाल पर सोने की चिड़िया करती है बसेरा...  
थलुः:-आयो अमर देश खां अमरु आहे-छा सघंदो मौत त मारे।  
साईं शांति प्रकाश अमरु आहे-२

१-पियो मोहन वांगुरु मुरली वज्ञाए-साध संगति खे नचाए।  
अजु देश-विदेश जी गलीअ गलीअ में-साख साईंअ जी आहे।  
अजु नण्ठो वट्ठो ऐं माई भाई पियो-गुण त साईंअ जा ग्राए॥

२-जंहिंजी सुहिणी सूरत मुहिणी मूरत-मिठड़ो पियो ग्राल्हाए।  
पंहिंजे प्रेम प्यार सां धारियनि खे भी-पंहिंजो साईं बणाए।  
आहे ज्ञान गुणनि जो सागरु साईं-ज्ञान जी गंगा वहाए॥

३-साईं माखीअ मिसरीअ खां भी मिठड़ो-अहिड़ो बियो ना ढिठड़ो।  
जंहिं सत्गुरु जे चरणनि में तन मन-अर्पन पंहिंजो कयड़ो।  
जंहिं ओट वर्ती साईं टेऊँराम जी-ब्रह्मानन्द साख सुणाए॥

~~~~~ भजन-१२२ ~~~

तर्जः:-लेके पहला पहला प्यार.....

थलुः:-जेको शरन अचे हिकवार-काटे चौरासीअ जो बार।
सत्गुरु शांति प्रकाश-आहे मोहन मनठार॥

१-शांति प्रकाश जहिड़ो सज्जुण न कोई-शरन अचे संसार सज्जोई।
द्विए थो सब खे ब्रह्म ज्ञान-जंहिंजी महिमा आहे महान, सत्गुरु.....

२-शांती प्रकाश जी सूरत धारियो-शरन पयनि जा कार्ज संवारियो।
करे नज़र सां निहाल-करे सब खे माला माल, सत्गुरु.....
३-वचननि जी हिति गंगा वहे थी-रोज़ अचण सां ज्ञाण पवे थी।
रखियो राणीअ मथां राज़-दिनो सुखनि जो साज, सत्गुरु....

~~~ ● भजन-१२३ ● ~~~

तर्जः-सारी सारी रात तेरी याद....  
थलुः-स्वामी शांती प्रकाश प्यारो-प्रेमिनि जो सो आहे सहारो।  
१-वाह वाह संत जी आहे रहिणी-कुर्ब सां बुधाइनि वेदनि जी कहिणी।  
जुग जुग जीए शल, जोगी जीयारो रे-स्वामी....  
२-मिठडो ग्राल्हाए सब खे मोहिनि था-गरीबनि बेवाहनि जी सार लहनि था।  
सभ सां मिलनि, दुनिया खा न्यारो रे-स्वामी....  
३-सभ खे समझाइनि कयो जगत जी शेवा-सारी संगति खे खाराइनि मिठडा मेवा।  
करे देश शेवा जो, ओनो प्यारो रे-स्वामी.....  
४-वचन साईंअ जा अमोलक आहिनि-सिक श्रद्धा सां जेके ग्राइनि।  
राणीअ वर्तो गुरुन जो सहारो रे-स्वामी.....

~~~ ● भजन-१२४ ● ~~~

थलुः-कांगल करि का खबर जिते रहनि रहिवर,
सत्गुरु शांती प्रकाश-अमरापुर जा धणी।
१-नांउ धणीअ जे उद्दिरु तूं कांगल-जोगी जिते रहनि था।
कां कां कजि तूं कुर्ब मां कांगल-टुकरी तोखे ढींदा।
मखण मानी दियांड-खीरु जानी दियांड-मुहिंजा सत्गुरु....
२-सिक त सज्जण तुंहिंजी डाढी सताए-वेतरि वई आ वधी।
जेतरि आणींदें तूं वरंदी-खबर न हिन संदी।
मुहिब मुक्की आ चिठी-डाढी लणी आ मिठी-मुहिंजा सत्गुरु....

३-पोस्ट खणी आ टपाली आयो-खणी आ आयो न्यापो।

शेवा सुमरण सत्संग दर्शन-इहो अथव जीअ जियापो।

आयो लाल लड़ी-दिसी दिलड़ी ठरी-मुंहिंजा सत्तुरु.....

४-रातियां ढींहं रोअंदे गुजारियां-वसु न बाबल हले।

चारई तर्फनि आहे अंधारी-चारो कीन चले।

राणीअ ते रहिमु करि-नूरी नज्जर करि-मुंहिंजा सत्तुरु.....

~~~ १२५ ~~~

थलुः-साई शांती प्रकाश जो नालो डाढो मिठो आहे।

डाढो मिठो आहे डाढो सुठो आहे॥

१-मुंहिंजे गुरुआ जे वद्दी आ वद्दाई-जेको अचे भलि मर्द या माई।

सभ खे गले पियो लग्नाए सुहिणो जसु आहे॥

२-दुई प्यारु सभ खे पंहिंजो बणाइनि-बोले बोल मिठिड़ा चित था चोराइनि।

प्रेमिनि लगे थो खुद कृष्ण आहिनि॥

३-शांती धाम मंदर में अचो श्रद्धा धारे-राधे श्याम टेऊराम दुख दर्द ठारे।

माता राणी चवे थी भलि को आज्ञमाए॥

~~~ १२६ ~~~

तर्जः-वो दिल कहां से लाऊँ.....

थलुः-स्वामी शांति प्रकाश प्यारा-जीअ मुंहिंजे जा जिआरा।

तोखां सवाइ सत्तुरु-रोअनि था नेण नारा॥

१-तूं आ रुहानी रहिबरु-दाता वद्दो आहिं दिलबर।

प्रेम सुधा जो सरोवर-साजन आहियो सूंहारा॥

२-साई तुंहिंजूं लख भलायूं-विसरनि नथियूं से वायूं।

छा छा चई बुधायां-तुंहिंजा अजब निजारा॥

३-मालिक तूं मुंहिंजे मन जो-बालक मां आहियां तुंहिंजो।

मूळे कजो न अहिंजो-रखजो शरण मंझारा॥

~~~~~ ॥ भजन - १२७ ॥ ~~~

तर्जः - परदेसी परदेसी जाना नहीं.....

थलुः - रहिमु मूं ते रहिमु मूं ते रहिम कयो -

रहिम जो घरु आं - रहिम जो घरु आं।

आ गुरु देव प्यारा संगति सहारा -

साईं चक शहर वारा ॥

१ - सावण महिनो पूरणमासी आई आ -

माता जुगल जी झोली थियड़ी साईं आ।

पिता आसूदे सभ खे दिनी वाधाई आ -

प्रेमिनि जी भी साईं आस पुजाई आ।

आ गुरुदेव प्यारा.....

२ - कलिजुग में अवतार बणिजी आयो आ - २ -

संतनि में सिरमोर बणिजी आयो आ - २।

गायुनि जो गोपाल बणिजी आयो आ - २ -

गोपियुनि में घनश्याम बणिजी आयो आ - २।

आ गुरुदेव प्यारा....

३ - कल्याणी अ जे पंजे नम्बर आस्थान कयो -

प्रेमिनि जो पूरब जन्म जो भागु खुलियो।

साईं शांति प्रकाश सत्गुरु मिली वयो -

दीननि खे दातार राणी मिली वयो।

आ गुरुदेव प्यारा.....